Digitized by eGangotri

किशोर उपन्यास माला क्रम—२

# बाजीराव पेशवा

उमा शंकर

SPS
891.433 U 2 B
31785

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

••स्कैन्ड/Scanned••

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

*Baji Rao Peshwa (Novel for Juveniles)*
*by Uma Shankar*
*Rs.* [redacted]

UMESH PRAKASHAN
PRICE
Rs. 2/50
5, NATH MKT., NAI SARAK, DELHI

© उमेश प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक | उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

मुद्रक | राष्ट्रभारती प्रेस, कूचा चेलान,
दरियागंज, दिल्ली-६

आवरण मुद्रक | परमहंस प्रेस,
दरियागंज, दिल्ली

संस्करण | (१९६७) 1967
तीसरा संस्करण

मूल्य | [redacted]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Acc. No. 54985
Cost Rs. 2.50
Date 17.9.69
Digitized by eGangotri
Library Srinagar
H83
U2B

# दो शब्द

शिवाजी के शासन में अलग-अलग विभाग के अलग-अलग मन्त्री हुआ करते थे। इन्हीं मन्त्रियों में जो प्रधान मन्त्री हुआ करता था वह 'पेशवा' के नाम से जाना जाता था। पेशवा फारसी का शब्द है, जिसका मतलब है अगुआ।

पेशवा बालाजी विश्वनाथ के पुत्र बाजीराव प्रथम थे। पिता की मृत्यु के उपरान्त बाजीराव, पेशवा घोषित हुए थे। २८ अप्रैल सन् १७४० ई० को ४२ वर्ष की अल्प आयु में उनकी मृत्यु हो गयी थी। उनकी मृत्यु जिस प्रकार हुई थी उसका पूरा विवरण इस उपन्यास में है।

बाजीराव पेशवा के विषय में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार 'सर रिचर्ड टेम्पल' ने इन शब्दों में लिखा है—"बाजीराव जीवनपर्यन्त यही कार्य करता रहा कि मराठों का अधिकार भारतीय महाद्वीप पर अरबसागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैल जाए। वह मराठों के बीच योद्धा पेशवा के नाम से स्मरण किया जाता है और उसे हिन्दू शक्ति का अवतार मानते हैं।"

इस उपन्यास में उपन्यास जैसी रोचकता तो है ही, साथ ही अधिक-से-अधिक इतिहास की पुस्तकों को छान-बीन कर सच्ची कथा दी गई है, जिससे किशोरों को इतिहास का भी उत्तम ज्ञान हो सके। यही उनके लिए आवश्यक है।

आशा है मेरा परिश्रम सफल होगा और देश के खिलते हुए फूल आदर्शों और कर्तव्यों का पालन करते हुए स्वयं और समाज को उन्नति की ओर बढ़ाते जायेंगे।

खास बाजार,
कानपुर

—उमाशंकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

# किशोर-उपन्यास-माला

[सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य]

## वीर रस से पूर्ण

कर्ण

अर्जुन — भीष्म
हल्दी घाटी — श्री कृष्ण
खूब लड़ी मर्दानी — वीर कुँवरसिंह
गुरु गोविंद सिंह — सम्राट शिलादित्य
चित्तौड़गढ़ की रानी — चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
वीरांगना चेन्नम्मा — महाबली छत्रसाल
गढ़मण्डल की रानी — बाजीराव पेशवा
सम्राट् अशोक — चन्द्रगुप्त मौर्य
जय भवानी — वीर कुणाल
दुर्गादास — तात्या टोपे

## अन्य महापुरुषों पर आधारित

महाकवि कालिदास — गुदड़ी का लाल : लालबहादुर
शान्ति—दूत नेहरू — मदुरा की मीनाक्षी
ऋषि का शाप — देवता हार गए
गुरु नानक देव — आचार्य चाणक्य
गुरु अंगद देव — मीरां बावरी
गुरु अमरदास — संत कबीर
गौतम बुद्ध — रवि बाबू

बापू

## शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान — हैमलेट — भूल पर भूल
मैकबेथ — राजा लियर — रोमियो जूलियट
जूलियस सीज़र — राई से पहाड़ — वेनिस का सौदागर

## शिकार, ज्ञान-विज्ञान आदि पर आधारित

अलीबाबा और चालीस चोर

रूपा और लल्ली — हाथी का शिकार — मगरमच्छ का शिकार
ह्वेल का शिकार — बाघ का शिकार — दैत्याकार पक्षी का शिकार

पूपू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



अगर आप सोचते हैं कि बच्चों के अच्छे उपन्यास हिन्दी में नहीं हैं, तो निश्चय ही आपको हमारी किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें पढ़ने या देखने का अवसर नहीं मिला है। एक-दो या चार-दस नहीं, बल्कि ५० से भी ज्यादा हम किशोर-उपन्यास प्रकाशित कर चुके हैं, आगे और करने जा रहे हैं।

विषय भी हमने अनेक चुने हैं। ऐतिहासिक नायक-नायिकाएँ, 'अरब की रातों' के राजा-रानी, ज्ञान-विज्ञान का अनोखापन, रामायण और महाभारत के पात्र, राष्ट्र और विभिन्न धर्मों के नायक, शिकार की रोमांचकारी घटनाएँ, प्रख्यात साहित्यकारों का जीवन और शेक्सपियर के नाटकों के रूपान्तर—कोई भी तो विषय ऐसा नहीं, जिसकी जानकारी निहायत दिलचस्प उपन्यासों के माध्यम से न दी गई हो। बच्चे तो बच्चे, बच्चों के माता-पिता भी अगर इन्हें ले बैठें तो पढ़ते रह जाएँ।

कहने को तो ये किशोर-उपन्यास हैं, किन्तु नवसाक्षरों तथा अहिन्दी भाषी पाठकों के लिए भी ये समान रूप से उपयोगी हैं।

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण —यही है हमारा उद्देश्य।

●

**प्रस्तुत उपन्यास में वीर बाजीराव पेशवा का मुगलों के साथ संघर्ष और उनका शौर्य पढ़ने को मिलेगा।**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

# एक

तब के पूना नगर और आज के पूना नगर में आकाश-पाताल का अन्तर है। उन दिनों मूढ़ा नदी और मूढ़ा नदी से घिरा हुआ पूना नगर अधिक सुन्दर दिखता था। थोड़े-से घरों में थोड़े-से लोग रहा करते थे, जिनका थोड़ा-सा व्यापार था। लोग प्रसन्न थे। परिवार भरे-पूरे थे।

इसी पूना में एक मुसलमान लड़की रहा करती थी। नाम था मस्तानी। उसकी आयु लगभग सत्तरह-अट्ठारह वर्ष की थी। उसके रूप और बहादुरी की चर्चा दूर-दूर के गाँवों तक हुआ करती थी। वह भाला और तलवार चलाने में प्रवीण थी। घुड़सवारी में अभी तक उसे कोई मात नहीं दे सका था। पूना-निवासी आखेट-प्रतियोगिता करते, तो मस्तानी भी मर्दाना लिबास पहनकर प्रतियोगिता में भाग लेती और जंगली भालू या दूसरे भयंकर जन्तुओं का शिकार करके बड़ों-बड़ों को अचम्भे में डाल देती थी।

दुर्भाग्य यह था कि मस्तानी एक वेश्या की लड़की थी। इतनी गुणवती होते हुए भी पेट पालने के लिए उसे नाचने-गाने का काम करना पड़ता था। संसार में उसकी अकेली माँ थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


जो बहुत बुड्ढी थी। वेश्या होते हुए भी मस्तानी का चरित्र पवित्र और निर्मल था। कभी किसी को उसके विरुद्ध कोई उल्टी-सीधी बात सुनने को नहीं मिली थी। इसी कारण समाज में उसकी प्रतिष्ठा थी। पूना के रहने वाले उसे इज्जत की निगाह से देखते थे और उसके साथ वैसा ही व्यवहार भी करते थे।

जाड़े की धूप ढल चली थी। मस्तानी की वृद्धा माँ रेहल के सामने झुकी हुई कुरान पढ़ रही थी। पैरों की आहट सुनकर उसने सिर उठाया। देखा, सामने से अहमद चला आ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



उसके लिए मस्तानी के घर में कोई रोक-टोक नहीं थी। वह पूना के एक बड़े व्यापारी का लड़का था और मस्तानी से विवाह करना चाहता था।

मस्तानी की माँ अहमद की इच्छा को समझती थी और स्वयं भी मन-ही-मन चाहती थी कि किसी प्रकार मस्तानी का विवाह उससे हो जाए। वह नहीं चाहती थी कि मस्तानी जीवन भर नाचने-गाने वाली बनी रहे।

अहमद ने समीप आकर बड़े अदब से उसे सलाम किया।

मस्तानी की मां ने आशीर्वाद दिया, "अल्लाह की मेहरबानी तुम पर हमेशा बनी रहे, बेटा। आज क्या बात है? बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे हो?"

अहमद ने उत्साह के साथ कहा, "आपको नहीं मालूम, अम्मी! कल मैंने चीते का शिकार किया था। जान पड़ता है मस्तानी ने आपको बताया नहीं। यही चीज तो लड़कियों में बुरी है। अपने से अच्छा किसी को नहीं देखना चाहतीं। मैं..."

तब तक मस्तानी कमरे से निकल कर सामने आ खड़ी हुई और मुँह बनाकर बोली, "जी हाँ, जी हाँ, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। अम्मी, जरा इनसे यह तो पूछो कि पहला भाला किसने मारा था?"

"भाला मारने से क्या होता है जी। चीते का वार रोकने वाला तो मैं ही था। अम्मी! लड़ाई मैंने लड़ी थी। तलवार उसके मुँह में मैंने डाली थी।"

मस्तानी हँसकर बोली, "ओह! एक चीता मारने पर इतना घमण्ड है। कहीं दो-चार मारे होते, तो सरकार के पैर जमीन पर पड़ते ही नहीं। खुदा गंजे को..."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



मस्तानी की माँ ने बीच में ही डाँटते हुए कहा, "दोनों भागो तो यहाँ से। जब देखो तब लड़ाई। पता नहीं तुम दोनों का जन्म किस दिन हुआ था। तू भी मस्तानी, बड़ी शैतान है। अहमद आता है तुझसे बातें करने के लिए और तू उससे लड़ने लगती है। चलो, उठो दोनों यहाँ से।"

दोनों उठकर चले गए। मस्तानी की माँ पुनः कुरान पढ़ने लगी।

मकान के पीछे एक छोटा-सा सहन था, जिसमें सब्जी बोई हुई थी। इधर-उधर कुछ फूलों के पौधे लगे थे। दीवार के किनारे-किनारे अमरूद के कई पेड़ भी थे। दोनों एक अमरूद के पेड़ के नीचे बैठ गए।

अहमद बोला, "आज तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। पूछूँ?"

"पूछो।"

"मैं बहुत दिनों से कहना चाहता था, परन्तु संकोचवश कह नहीं पा रहा था। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मस्तानी! और तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूँ। क्या तुम मुझसे विवाह करने के लिए तैयार हो?"

मस्तानी ने सर झुका लिया! धीरे से बोली, "अभी और सोच लो, अहमद! विवाह खिलवाड़ नहीं है। फिर एक वेश्या के साथ विवाह करने के लिए बहुत साहस और सच्चे प्रेम की आवश्यकता है। अभी तुम अपने हृदय को और टटोलो। ऐसा न हो कि विवाह करने के कुछ दिनों बाद यह बात तुम्हें चुभने लगे और तुम मुझे छोड़ कर कहीं और चल दो। पुरुषों का कोई ठिकाना नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



अहमद ने उत्साह से कहा, "मैं तुम्हारी बातों से इन्कार नहीं करता, लेकिन मुझ पर तुम्हें ऐसा सन्देह नहीं करना चाहिए। मुझे तुम बहुत दिनों से समझती चली आ रही हो।"

मस्तानी बोली "सो तो ठीक है पर बड़ों का कहना है कि जल्दी का काम शैतान का होता है। अभी तुम्हें और सोचने की जरूरत है। उठो! शाम हो रही है। अभी और काम देखने हैं।" वह खड़ी हो गई।

अहमद भी उठ खड़ा हुआ और पुनः आने को कहकर चला गया।

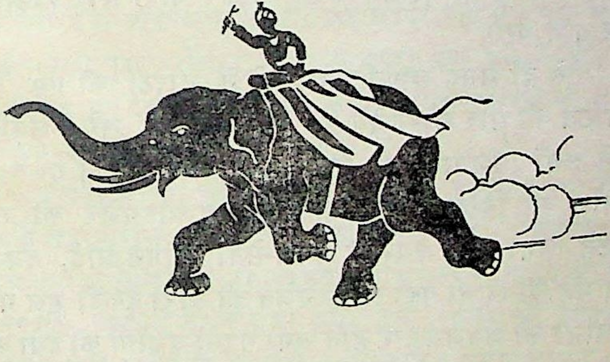

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## दो

मुगल - सम्राट औरंगजेब अपने पिता शाहजहाँ को बन्दी बनाने और दारा शिकोह ऐसे योग्य भाई का वध कराने के उपरान्त दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था। वह बड़ा अत्याचारी था और हिन्दू धर्म का घोर विरोधी था। सम्राट बनते ही वह हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाने लगा था। अनेक मन्दिरों को तुड़वाकर उसने उनके स्थान पर मस्जिदें बनवा दीं। विरोधियों को वह हाथियों के पैरों से कुचलवा देता। उसके जुल्म से सारा हिन्दुस्तान कराह उठा। चारों ओर हाहाकार मच गया था।

ऐसे ही समय छत्रपति शिवाजी ने मराठों की एक सेना संगठित की और औरंगजेब का विरोध करने लगे। लड़ाइयाँ होने लगीं। शिवाजी की वीरता और मराठों की एकता ने कमाल कर दिखाया था। महाराष्ट्र से औरंगजेब की सत्ता मिटने लगी थी। जब-जब मुगल-सेना सामने आई, तब-तब उसे मुंह की खानी पड़ी। औरंगजेब की सारी हेकड़ी भूल गई। शिवाजी की जयजयकार होने लगी परन्तु दुर्भाग्य को क्या कहा जाए? अचानक शिवाजी की मृत्यु हो गई। बनता हुआ काम बिगड़ गया।

औरंगजेब की फिर बन आई। उसने महाराष्ट्र को बुरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

तरह रौंद डाला। रायगढ़ पर उसका अधिकार हो गया और शिवाजी के पुत्र शम्भाजी बन्दी बनाए गए। उन्हें नंगा करके उनके सारे बदन पर कालिख पोती गई। औरंगजेब की आज्ञा से उन्हें तुलापुर की प्रत्येक गली और सड़क पर घुमाया गया। उसके बाद वह दरबार में लाए गए। औरगजेब हँसता हुआ बोला, "यह है शिवा का लड़का शम्भा! हिन्दू धर्म को बचाने वाला। जरा सब लोग इसकी सूरत देखें!" वह ठहाका मारकर हँस पड़ा।

शम्भाजी भी जोर से हँस पड़े और गरजते हुए बोले, "और यह है शाहजहाँ का लड़का औरंगजेब! मुसलमान धर्म को बचाने वाला, जिसने अपने बाप और भाइयों को..."

बीच ही में औरंगजेब चिल्ला उठा, "काट लो इसका सिर।"

शम्भाजी का सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

औरंगजेब का अत्याचार इसी प्रकार चलता रहा, परन्तु इस संसार में कोई अमर होकर तो आया नहीं है। एक-न-एक दिन सबकी मृत्यु होती है। २० फरवरी सन् १७०७ ई० को औरंगजेब का देहान्त हो गया। कराहती हुई भारत की धरती को पल भर चैन मिला।

मराठों में पुनः चेतना आई। साहस बढ़ा। शम्भाजी के लड़के शाहू ने पुनः मराठों को एकत्रित किया। सेना बनाकर वे महाराष्ट्र से मुगलों को खदेड़ने लगे। पुनः स्वराज्य की स्थापना हुई। मराठा राज्य बना और इस राज्य की राजधानी सतारा बनी। धीरे-धीरे राज्य बढ़ने लगा। मुगल भागने लगे।

शाहू के प्रथम प्रधान मन्त्री बालाजी विश्वनाथ, जो पेशवा बालाजी विश्वनाथ के नाम से पुकारे जाते थे, बड़े योग्य और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



बहादुर व्यक्ति थे। उन्होंने अतुलनीय साहस और परिश्रम से मराठा राज्य की नींव को मजबूत बनाया था। वह उस समय असम्भव को सम्भव करने के समान था, परन्तु दुर्भाग्यवश उनकी भी असमय मृत्यु हो गई। तब शाहू ने उनके बाईस वर्षीय पुत्र बाज़ीराव को पेशवा घोषित किया। बाजीराव के अन्दर उनके पिता के सारे गुण थे। शाहू को भरोसा था कि यह युवक प्रधान मन्त्री के भार को भली-भाँति सँभाल सकेगा।

शाहू का भरोसा ठीक निकला। साल-दो साल के भीतर ही बाजीराव ने अपनी वीरता और साहस का ऐसा परिचय दिया कि अत्याचारी मुगल थर्रा उठे। दिल्ली-सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला की उलझन बढ़ गई। बाजीराव की ख्याति फैल गई। वे सौ वर्ष तक जीवित रहें, यही सब ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। चारों ओर उनकी वीरता का आतंक छा गया। अत्याचारियों से देश मुक्त हो जाएगा, ऐसी आशा दिखलाई पड़ने लगी। मराठा राज्य उन्नति की ओर बढ़ने लगा।

पूना में खबर फैली कि पेशवा बाजीराव मालवा से लौट रहे हैं और दो दिन पूना में रुककर तब सतारा को प्रस्थान करेंगे। पूना निवासी बड़े प्रसन्न थे। पेशवा के रूप में बाजीराव को देखने का यह उनका पहला अवसर था। इसलिए पेशवा के स्वागत-सत्कार के लिए उन्होंने बड़ी धूम-धाम से तैयारी आरम्भ कर दी। नगर झण्डियों और पताकाओं से चमक उठा।

बाजीराव सेना सहित पूना आ पहुँचे। उन्हें देखने के लिए नगर उमड़ पड़ा। मस्तानी भी भीड़ में खड़ी उचक-उचककर देख रही थी। पेशवा मुख्य सड़कों से होते हुए पड़ाव पर जा पहुँचे। सन्ध्या समय लोगों ने पेशवा को नजरें भेंट कीं। बाजी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


राव बड़ी रात गए तक सबसे बातें करते रहे। नगर-निवासी बाजीराव के स्वभाव और उनके आकर्षक व्यक्तित्व से बड़े प्रभावित थे। घर-घर में उनकी प्रशंसा हो रही थी।

बाजीराव को शिकार खेलने का बड़ा शौक था। जब भी उनको अवकाश मिलता, शिकार खेलने निकल जाते और अधिकतर ललकारकर भयंकर पशुओं का ही आखेट करते थे। उन्होंने दूसरे ही दिन नगर के शिकारियों को निमन्त्रित किया और शिकार को निकल पड़े। सब अपने-अपने घोड़ों पर सवार जंगल की ओर हवा की भाँति उड़ चले। घने जंगल में पहुँच कर पेशवा ने सब को रोकते हुए कहा, "सब अपने घोड़ों को यहीं बाँध दें और अलग-अलग शिकार को जाएँ। देखना है कौन क्या-क्या लाता है। जाइए!"

सब शिकारी एक-एक करके जंगल में फैल गए। पेशवा भी एक ओर को चल पड़े।

कुछ दूर जाने पर बाजीराव को गुर्राहट सुनाई दी और बाईं ओर की झाड़ी से एक चीता निकलकर आगे को बढ़ा। बाजीराव ने झट से तलवार म्यान से खींच ली और चीते को ललकारा। चीता ठिठका, उसने घूरा, फिर अपने दोनों पंजों से मिट्टी करौंदता हुआ बड़े-बड़े नुकीले दाँत निकालकर गुर्राया। बाजीराव भी सतर्क थे। उन्होंने पुनः ललकारा। चीते ने भयंकर गर्जना के साथ छलाँग मारी। शिकार में निपुण बाजीराव चीते का वार बचा गए फिर वे मुड़कर चीते पर वार करने ही वाले थे कि पीछे से एक भाला सनसनाता हुआ आया और चीते के पेट में धँस गया। चीता लड़खड़ाया और जिधर से भाला आया था, मुड़कर उधर झपटा। भाला मारने वाला पहले से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

तैयार था। उसने अपनी तलवार उसके मुँह में घुसेड़ दी। चीता लड़खड़ाकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। वह एक बार तड़फड़ाया, फिर ठंडा पड़ गया।

बाजीराव ने समीप पहुँचकर उस युवक की पीठ ठोंकी, "शाबाश बहादुर! इतनी कम उम्र में ऐसा साहस! धन्य हैं तुम्हारे माता-पिता! पूना के ही रहने वाले हो?"

"जी श्रीमन्त!" कहकर युवक अपने हाथ को देखने लगा। कई स्थानों पर दाँत लग जाने के कारण उसका हाथ लहूलुहान हो रहा था। पर किसी कारणवश वह अपना साफा खोलकर हाथ पर लपेटना नहीं चाहता था। वह सोच में पड़ गया। तब तक पेशवा ने अपना साफा खोलकर फाड़ डाला और उसका हाथ पोंछने के बाद पट्टी बाँधते हुए हँसकर कहा, "तुम्हारे हाथ तो बिल्कुल स्त्रियों जैसे हैं। इन हाथों से भी ऐसे शिकार कर लेते हो? आश्चर्य है!"

युवक कुछ झेंपा, परन्तु इस भय से कि कहीं उसका भेद न खुल जाए, उसने अपने को सँभाला और मजाक के रूप में कहा, "तब तो श्रीमन्त को हमें और शाबाशी देनी चाहिए। स्त्रियों जैसे हाथ पाकर भी ऐसा काम करना अधिक महत्व की बात है न?"

"तुम्हारी वीरता की जितनी बड़ाई की जाए, वह थोड़ी है। मैं तो चाहूँगा कि तुम्हारे जैसे बहादुर युवक मेरी सेना में आकर देश और धर्म की रक्षा करने में मुझे सहयोग दें। आज देश को तुम जैसे बहादुरों की ही आवश्यकता है। बोलो, तैयार हो?"

युवक बड़ी उलझन में पड़ गया। क्या कहे, क्या न कहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



पेशवा की बात से इन्कार करना भी उचित नहीं था और साथ ही अपना भेद भी नहीं खोला जा सकता था। उसकी परेशानी बढ़ गई।

तब तक पेशवा बोल उठे, "खूब सोच लो, अभी जल्दी नहीं है। अपने माता-पिता से सलाह कर लो। जाओ। मैं इधर से जाऊँगा।" वे दूसरी ओर मुड़ गए।

जब तक बाजीराव दिखलाई पड़ते रहे, युवक वहीं खड़े-खड़े उन्हें देखता रहा। उनके आँखों से ओझल होने पर वह मुड़ा और कुछ सोचता हुआ पूना की ओर चल पड़ा।

यह मर्दाने पोशाक में मस्तानी ही थी, जिसने अपनी वीरता और साहस का परिचय देकर बाजीराव को आश्चर्य में डाल दिया था। मस्तानी ने घर पहुँचते ही अपनी माँ से एक-एक बात विस्तार के साथ बतलाई।

बुढ़िया की गर्दन गर्व से तन गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## तीन

दूसरे दिन अहमद को देखते ही मस्तानी चिल्ला पड़ी, "खूब आए। मैं तो तुम्हारे यहाँ किसी को भेजने ही वाली थी। इधर हफ्तों कहाँ गायब रहे ? मुझसे नाराज हो गए हो क्या ? कल का हाल तो तुम्हें मालूम न होगा ? होते तो देखते कि मस्तानी के आखेट में और तुम्हारे आखेट में कितना अन्तर है। पेशवा साहब के वार के पहले मैंने वार करके चीते का काम तमाम कर दिया था।" मस्तानी सब कुछ एक साथ कह डालना चाहती थी।

अहमद ने पूछा, "कौन ? बाजीराव पेशवा ? उनसे तुम्हारी भेंट कहाँ हो गई ?"

"बस समझ लो, होनी थी इसलिए हो गई और ऐसी हुई कि वे दाँतों तले अँगुली दबाकर रह गए।" फिर मस्तानी ने बड़े उत्साह से सारी घटना सुना दी।

अहमद मुस्कराया, "बाजीराव तो देखकर दंग रह गए होंगे ? एक लड़की इस तरह..."

मस्तानी बीच में बोल पड़ी, "तब तो शायद अधिक दंग रह जाते, अहमद; लेकिन मैं तो मर्दाने वेश में थी। फिर भी वे बड़े प्रसन्न थे। मुझसे बार-बार सेना में भर्ती होने के लिए कह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


रहे थे। पर उन बेचारे को क्या मालूम कि यह लड़के के वेश में कोई लड़की है।"

अहमद ने कहा, "तो तुमने पेशवा साहब को खूब बुद्धू बनाया ?" वह ठहाका मार कर हँसा।

मस्तानी भी हँस पड़ी, "मजबूरी थी। अगर ऐसा न करती तो मेरा भेद खुल जाता। तब वह मुझे बुद्धू बनाने लगते।"

अहमद हँसता रहा।

मस्तानी ने पुनः कहा, "तुमने तो पेशवा साहब को देखा होगा, अहमद ? वास्तव में वे पेशवा होने योग्य हैं। देखने में जितने सुन्दर हैं उतने ही बहादुर भी हैं। अल्लाह ने चाहा तो उन्होंने जिस काम के लिए बीड़ा उठाया है, उसमें सफलता प्राप्त कर लेंगे।"

अचानक अहमद के चेहरे पर गम्भीरता छा गई। उसने तनिक रूखे शब्दों में पूछा, "तुम्हें मालूम है उन्होंने क्या बीड़ा उठाया है ?"

मस्तानी ने कहा, "क्यों नहीं मालूम है ? उनका कहना है कि वे अत्याचारी मुगलों का नाश करके देश में शान्ति स्थापित करेंगे।"

अहमद सिर हिलाकर बोला, "तब तुम्हें कुछ नहीं मालूम। उन्हें हम मुसलमानों से नफरत है और बदला लेने के विचार से हम मुसलमानों को जड़ से मिटा देना चाहते हैं। तुम हिन्दुओं की चालाकी समझती नहीं हो।"

मस्तानी ने अविश्वास भरे स्वर से विरोध किया, "यह बात गलत है अगर उन्हें ऐसा करना होता तो अब तक मराठा राज्य के अन्दर एक भी मुसलमान देखने को न मिलता। सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


मार डाले गए होते।"

अहमद ने होंठ विचका कर भारी आवाज से कहा, "यह भी होगा। पहले हैदराबाद के निजाम को पराजित तो कर लें। अभी उनको निजाम का भय है। निजाम के हारते ही फिर देखना, हम लोगों की कैसी दुर्दशा होती है।"

"तुम पेशवा को पहचानते नहीं, अहमद! वे न मुसलमानों के दुश्मन हैं न हिन्दुओं के, वे तो अत्याचारियों के शत्रु हैं! तुम धर्म के कारण अन्धे होकर ऐसी बातें सोचते हो!"

अहमद मस्तानी की बातों से चिढ़ता जा रहा था। उसने कठोर शब्दों में कहा, "हिन्दुओं को हमारे कुरान में काफिर कहा गया है, मस्तानी! उनके पक्ष में बोलना भी पाप समझा जाता है। इस्लाम इसे माफ नहीं करता।"

मस्तानी हँसकर बोली, "इस्लाम को तुमने समझा भी है या यों ही बके जा रहे हो! मैंने कुरान पढ़ी है और अब भी अम्मी से पढ़ती हूँ। कुरान में ऐसा कुछ नहीं लिखा है। अल्लाह ने सबके साथ प्रेम से मिलकर रहने को कहा है। धर्म के नाम पर ऐसी गन्दी बातें न किया करो, अहमद! हिन्दू और मुसलमान अब दोनों इसी मिट्टी के हैं।"

अहमद ने दाँत पीसकर कहा, "मैं समझा! पेशवा के रूप ने तुम पर ऐसा जादू किया कि तुम अपना-पराया तक भूल गई हो।"

मस्तानी उसी प्रकार मुस्कराती हुई बोली, "अगर ऐसा ही हो गया हो, तो इसमें बुराई क्या है? पेशवा साहब ऐसे वीर और महान् पुरुष की ओर आकर्षित होना अचम्भा नहीं है!"

अहमद तिलमिला उठा, "तो अब तुम्हारा मुझसे कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सम्बन्ध नहीं रहा, क्यों ?"

मस्तानी ने आँखें फेर लीं। बोली "यह तुम्हारी समझ का फेर है। तुमसे मेरा सम्बन्ध जैसे पहले था, वैसे अब भी है। मेरे हृदय में छिछोरापन नहीं है।"

अहमद खड़ा हो गया और क्रोध से बोला, "अच्छी बात है। बताऊँगा! अभी तुमने अहमद को समझा नहीं है।" वह तेजी से निकल गया।

31785
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## चार

तीसरे दिन बाजीराव का पड़ाव उठ गया और वह अपनी सेना के साथ सतारा को चल पड़े। परन्तु शीघ्र ही सुनने में आया कि वे फिर पूना को आ रहे हैं और वहाँ से कर्नाटक की ओर जाएँगे। पूना-निवासियों ने फिर उसी प्रकार स्वागत-सत्कार की तैयारी की।

बाजीराव आए। लोगों ने जयजयकार की और उनके प्रति अपनी श्रद्धा का परिचय दिया।

बाजीराव ने इस बार लगभग एक सप्ताह तक पूना में रुकने का विचार किया था। इस कारण दूसरे दिन तो नहीं, परन्तु तीसरे दिन से उनके आखेट का कार्यक्रम आरम्भ हो गया। वे नित्य शिकार को जाने लगे। मस्तानी भी छिपे रूप से आती और छिपे रूप से लौट जाती। बाजीराव के प्रति उसका आकर्षण बढ़ता गया।

एक दिन बाजीराव घोड़े पर उड़ते हुए जंगल की ओर चले जा रहे थे। उसी समय मस्तानी ने दूर से अहमद को घोड़े पर उनके पीछे जाते हुए देखा। मस्तानी को सन्देह हुआ। उसने भी अपना घोड़ा बढ़ाया और अधिक सतर्कता के साथ छिपती हुई अहमद के पीछे-पीछे चलने लगी।

बाजीराव को अपने पीछे किसी घुड़सवार की आहट मिली,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


तो उन्होंने मुड़कर देखा। अहमद पीछे चला आ रहा था। वे मन-ही-मन अहमद की घुड़सवारी पर प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने घोड़े की चाल धीमी कर दी। शायद उन्होंने अहमद को साथ लेने की सोची।

पास पहुँचकर अहमद ने इधर-उधर देखा और सहसा अपना भाला तान कर पेशवा पर वार करने ही वाला था कि अचानक पीछे से एक भाला अहमद के घोड़े के पुट्ठे पर आ धँसा। घोड़ा पीड़ा से तड़पकर हिनहिना उठा, लड़खड़ाया और गिर पड़ा। अहमद के हाथ से भाला छूट गया और वह घोड़े से लुढ़कता हुआ दूसरी ओर जा गिरा।

घोड़े की कराह-भरी हिनहिनाहट और उसके गिरने के शब्द से पेशवा चौंक गए। उन्होंने पीछे देखा, पर कुछ समझ न सके। वे घोड़े से कूदकर अहमद की सहायता के लिए दौड़े। पेशवा के पहले ही मर्दाने पोशाक में मस्तानी उसके पास पहुँच चुकी थी। उसने अहमद को घूरते हुए कड़े शब्दों में पूछा, "क्यों अहमद, अब इस नीचता पर उतर आए हो? हद कर दी तुमने। क्या यही इस्लाम की शिक्षा है?"

अहमद बोलने में असमर्थ था। उसके मुँह और हाथों में गहरी चोट आई थी। घुटने लहू-लुहान हो रहे थे।

पेशवा ने आते ही पूछा, "क्या हुआ?"

परन्तु जैसे ही उनकी दृष्टि मस्तानी पर पड़ी, वे चौंक उठे—"तुम युवक? आज यहाँ फिर कैसे? बात क्या है? यह कौन है?" पेशवा को अभी वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो सका था।

मस्तानी बोली, "यह आपकी हत्या करने का प्रयत्न कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


रहा था, श्रीमन्त !" विवश होकर मस्तानी को बतलाना पड़ा।

पेशवा ने चकित होकर अहमद की ओर देखा। फिर मस्तानी से पूछा, "मेरी हत्या ?"

"जी श्रीमन्त !"

पेशवा की नजर पास ही अहमद के छटपटाते हुए घोड़े की ओर गई। उन्होंने बढ़कर घोड़े के पुट्ठे में से भाला खींच लिया। घोड़ा उठा, पर तुरन्त ही फिर गिर पड़ा और पड़पकर मर गया। उन्हें बात समझ में आई। वे मस्तानी से बोले, "घोड़े को भाला तुमने मारा था ?"

"जी श्रीमन्त !" मस्तानी ने सिर हिलाया।

पेशवा को बड़ा आश्चर्य हुआ। पूना का ही रहने वाला उनकी हत्या का प्रयत्न करे ! आखिर क्यों ? अजीब बात थी। उनके मुंह से निकला, "परन्तु मेरी हत्या करने का क्या कारण है, युवक ?"

मस्तानी चुप रही, वह क्या उत्तर दे सकती थी ?

पेशवा ने अहमद को घूरा और उनका हाथ तलवार की मूंठ पर पहुँचा। उन्होंने पूछा, "यह मुसलमान है ?"

मस्तानी ने धीरे से कहा, "मुसलमान तो मैं भी हूँ, श्रीमन्त !"

पेशवा का हाथ रुक गया, "तुम भी मुसलमान हो ?"

"जी।"

पेशवा ने पूछा, "इसे तुम जानते हो ?"

"जी हाँ। यह मेरे परिचितों में से है। मेरे यहाँ आता-जाता है।" मस्तानी ने अहमद की ओर देखे बिना कहा।

पेशवा ने कहा, "तब तो तुम्हें अवश्य कुछ-न-कुछ मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



होना चाहिए ?"

"मालूम ही समझें, श्रीमन्त ! नाहीं करने से तो आपकी शंका और बढ़ जाएगी न ?" मस्तानी ने सिर झुका लिया।

पेशवा मस्तानी का आशय नहीं समझ सके। बोले, "मेरी हत्या का कारण भी जानते हो ?"

मस्तानी ने हाथ जोड़े, "श्रीमन्त से कारण न बताकर हम इसके जीवन-दान के लिए प्रार्थना करेंगे। हमें विश्वास हैं, यह जीवन-दान पाकर अपनी नीचता पर जीवन भर पश्चात्ताप करता रहेगा। श्रीमन्त के सामने वैसे भी पहली गलती के लिए माफी होनी चाहिए।

पेशवा मुस्कराने लगे, "युवक, तुम जितने वीर हो, बातों में उतने ही चतुर हो। तुमने मेरी जान बचाई है, इसलिए तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जाती है और साथ ही तुम्हें यह पुरस्कार भी दिया जाता है।"

पेशवा ने अपने गले से मोतियों का हार निकालकर उसके गले में डाल दिया।

मस्तानी से सिर नवाकर प्रणाम किया।

पेशवा ने पुनः कहा, "क्यों, तुमने अपने घर वालों से पूछा था ? मैं तुम्हें अपनी सेना में रखने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।"

मस्तानी ने झूठ कह दिया, 'जी हाँ। बात-चीत की है। हमारी बूढ़ी माँ बहुत कुछ तैयार हो चली हैं। अब शीघ्र ही श्रीमन्त की सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।"

"ठीक है।" पेशवा कूदकर अपने घोड़े पर चढ़ गए।

उन्होंने अहमद की ओर संकेत किया, "इसका क्या होगा ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



मस्तानी बोली, "श्रीमन्त की आज्ञा हो तो उसे हम अपने साथ घोड़े पर ले जाएँ।"

पेशवा ने सिर हिलाकर अनुमति दी और अपने घोड़े को एड़ लगा दी। घोड़ा उड़ चला।

पेशवा के आँखों से ओझल हो जाने पर मस्तानी ने अहमद को सहारा देकर खड़ा किया और अपने घोड़े पर बैठा लिया। अहमद की आँखें मारे शर्म के गड़ी जा रही थीं। उसने बहुत साहस बटोरकर कहा, "मस्तानी, में बहुत लज्जित हूँ। मैं बता नहीं सकता, किस पागलपन में मुझसे यह नीच काम हो गया है! मैं तुमसे माफी चाहता हूँ।"

मस्तानी घोड़े की रास पकड़े चल रही थी। वह बोली, "सच्चा प्रेम करना सीखो, अहमद ? सुख और शान्ति पाने के लिए इससे उत्तम रास्ता नहीं है।"

उसने आगे और कुछ नहीं कहा, चुपचाप चलती रही।

दूसरे दिन पूना में सूचना फैलते देर न लगी कि अहमद सब कुछ छोड़कर कहीं चला गया है।

दो दिन बाद पेशवा ने कर्नाटक की ओर प्रस्थान कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## पाँच

हैदराबाद का निजाम बहुत दिनों से इस प्रयत्न में था कि किसी प्रकार मराठों में फूट डालकर मराठा-राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया जाए। इस काम के लिए उसे दिल्ली के सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला से भी सहायता मिल रही थी।

निजाम का जाल बिछ रहा था क्योंकि बिना आपसी फूट के बाजीराव को युद्ध में पछाड़ना सम्भव नहीं था।

बहुत परिश्रम के उपरान्त अन्त में निजाम की धूर्तता सफल हुई। उसने कोल्हापुर के सरदार सम्भाजी को मिला लिया। सम्भाजी निजाम के कहने में आ गया और उसने निजाम की सलाह से अपने को मराठा-राज्य का स्वामी घोषित किया और इस आशय का एक पत्र शाहू को भी लिख दिया। पत्र पढ़कर शाहू चिन्तित हुए और तत्काल सम्भाजी को पत्र लिखकर इसका कारण पूछा। सम्भाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया और वह निजाम के कहने के अनुसार सतारा पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगा।

उधर निजाम ने एक और शैतानी की। उसने अपने सूबेदार तुर्कताजखाँ, ईनाजखाँ और गयासखाँ को आदेश दिया कि वे मराठा इलाकों में घुसकर लूट-मार आरम्भ कर दें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


निजाम ने इतना ही नहीं किया, वरन् उसने रुपयों के बल पर कुछ चाटुकार मराठों को भी अपनी ओर मिला लिया और सतारा के आस-पास गाँवों में छुटपुट लड़ाइयाँ आरम्भ करवा दीं।

शाहू बड़ी उलझन में पड़ गए। उन्होंने पुनः पत्र लिखकर सम्भाजी को समझाने का प्रयत्न किया। पत्र इस प्रकार था—

"श्री सम्भाजी,

"मैं एक पत्र आपको लिख चुका हूँ, परन्तु आपने कोई उत्तर नहीं दिया। जो कुछ मुझे मालूम हुआ है, उससे मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आपको मेरा राज्य-प्रबन्ध पसन्द नहीं है। ऐसा हो सकता है। उस पर मुझे आपत्ति नहीं, किन्तु यह समय भेद-भाव का नहीं है। इस समय हमें एक होकर अपनी संगठित शक्तियों द्वारा मुगल प्रान्तों को अपने अधिकार में करके स्वराज्य की नींव को दृढ़ करना है, जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने किया था। आप दक्षिण भारत को सँभालें और मैं उत्तर भारत को। जो कुछ मुझे उत्तर में प्राप्त हो, उसमें उचित भाग मैं आपको दूँ और आपको जो कुछ दक्षिण में प्राप्त हो, उसमें आप मुझे दें—यही सही रास्ता है।"

पर सम्भाजी को यह बात कैसे पसन्द आती? वह तो निजाम की सहायता से पूरे मराठा-राज्य का स्वामी बनने का स्वप्न देख रहा था। उसने शाहू के इस पत्र का भी उत्तर नहीं दिया। वह अपनी सेना लेकर हैदराबाद की ओर चल पड़ा। हैदराबाद में निजाम की सेना उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। दोनों सेनाएँ मिलकर सतारा पर आक्रमण करने वाली थीं।

Sri Pratap Singh Library
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

निजाम की सेना के साथ सम्भाजी सतारा को चल पड़ा। बाजीराव इस समय कर्नाटक में थे, इस कारण सम्भाजी को और भी भय नहीं था। दूसरे किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी जो इन दो मिली सेनाओं को पराजित कर सकता।

सम्भाजी रास्ते में पड़ने वाले इलाकों पर अपना अधिकार जमाता हुआ पूना आ पहुँचा। पूना पर भी उसका अधिकार हो गया। शाहू की सेना विवश थी। बिना योग्य सेनापति के वह कर भी क्या सकती थी! फिर ऐसे समय, जब आपस में फूट पड़ गई हो!

पूना पर सम्भाजी के अधिकार की सूचना मिलते ही शाहू के हाथ-पैर ढीले पड़ गए। उन्होंने तत्काल अपने मन्त्रियों की बैठक बुलाई। बड़ी देर तक सोचने-विचारने के उपरान्त अधिकतर मन्त्रियों ने यही राय दी कि निजाम को बीच में डालकर किसी प्रकार सन्धि की वार्ता चलाई जाए। उनका कहना था कि निजाम को मराठा राज्य का कुछ भाग देकर अपनी ओर मिलाया जा सकता है।

शाहू ने व्यथा भरे शब्दों में कहा, "यह तो बड़े अपमान की बात होगी। इतने परिश्रम के बाद बनी हुई यह प्रतिष्ठा यों ही मिट्टी में मिल जाएगी?"

एक मन्त्री बोला, "श्रीमान्! इस समय इसके अतिरिक्त और कोई चारा नही है। 'घर का भेदी लंका ढाहे' वाली समस्या जो आ खड़ी हुई है। मजबूरी में सब कुछ करना पड़ता है, श्रीमन्त!"

शाहू कुछ समय तक मौन सोचते रहे और अंत में उन्होंने सन्धि की बात-चीत करना ही उचित समझा। उन्होंने कान्होजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भोंसले पर वार्ता करने का भार सौंपा।

सभा समाप्त हुई और शाहू उठ खड़े हुए। तब एक सैनिक ने आकर अभिवादन किया।

"क्या है?" शाहू ने पूछा।

सैनिक ने झुककर निवेदन किया, "पेशवा साहब अपनी सेना सहित सतारा के समीप आ गए हैं, श्रीमन्त!"

शाहू की बाछें खिल गईं। मन प्रसन्नता से नाच उठा। उन्होंने कान्होजी को रोक दिया और उसी समय अपने अंग-रक्षकों के साथ बाजीराव से मिलने चल पड़े।

दोनों की भेंट हुई। शाहू ने बाजीराव को गले से लगा लिया और फिर सारी बात कह सुनाई। बाजीराव ने उनको ढाढस दिया।

दूसरे ही दिन बाजीराव ने युद्ध की घोषणा की और अपनी सेना को लेकर पूना की ओर बढ़ चले।

बाजीराव के आगमन की सूचना मिलने पर सम्भाजी को दिन में ही तारे नजर आने लगे। बाजीराव से भिड़ने का साहस उसके अन्दर नहीं था। उसे अपनी जान अधिक प्यारी थी, इस लिए वह सेना सहित पूना छोड़कर हैदराबाद को भाग चला। बाजीराव पूना होते हुए उसका पीछा करने लगे। उन्होंने निजाम को उसकी बदमाशी का मजा चखाने का निर्णय किया था और सदा के लिए निजाम राज्य का अन्त कर देने की ठानी थी। 'न रहे बांस, न बजे बाँसुरी' वाला संकल्प था।

उधर सम्भाजी ने हैदराबाद पहुँच कर निजाम को सारी स्थिति बताई। निजाम क्रोध में आगबबूला हो गया और सम्भाजी को उसकी कायरता पर काफी डाँटता-फटकारता रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



फिर उसने भी युद्ध की घोषणा की और अपनी विशाल सेना तथा बड़ी-बड़ी तोपें लेकर बाजीराव को रौंदने के लिए निकल पड़ा। उसने भी बाजीराव का नामनिशान तक मिटा देने का संकल्प कर लिया था।

उसने एक चालाकी से काम लिया। वह सीधे बाजीराव के सामने न आकर दूसरे मार्ग से पूना की ओर चल पड़ा। उसका इरादा था पहले पूना पर अधिकार करके तब सतारा पर आक्रमण। पर पेशवा बाजीराव का गुप्तचर-विभाग बड़ा निपुण था। उन्हें एक-एक बात की सूचना मिलती रहती थी। निजाम वाली सूचना भी उन्हें ही मिल गई। वह मन-ही-मन मुस्कराए और तत्काल अपनी सेना को बुरहानपुर की तरफ मुड़ने का आदेश दिया। सैनिक उस ओर मुड़ चले।

बुरहानपुर निजाम की बहुत बड़ी मंडी थी, जिसे किसी भी स्थिति में निजाम नष्ट होते नहीं देख सकता था। बाजीराव इसे भली-भाँति समझते थे और इसी कारण उधर मुड़े भी थे। यह खबर पाते ही निजाम चिन्तित हो उठा। उसने पूना पर आक्रमण करने का विचार छोड़ दिया और तुरन्त बुरहानपुर की रक्षा के लिए लौट पड़ा।

पेशवा की चतुराई काम कर गई।

निजाम ने सोचा कि पेशवा को खुले मैदान में घेर कर उसकी धज्जियाँ उड़ा दी जाएँ क्योंकि उसके पास बड़ी-बड़ी तोपें थीं। परन्तु पेशवा भी असावधान नहीं थे। जब उनको निजाम के लौटने की सूचना मिली तो उन्होंने भी नई युक्ति अपनाई। उन्होंने सोचा कि निजाम को उस स्थान पर लाया जाए, जहाँ उसकी तोपों का कोई उपयोग न हो सके। उनकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सेना के पास तोपें नहीं थीं कि तोपों का सामना करते, इसलिए उन्होंने निजाम को चकमा देना आरम्भ कर दिया।

दोनों सेनापति अपनी-अपनी चतुराई में सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे। निजाम पेशवा को घेरकर खुले मैदान में ले आने का प्रयत्न कर रहा था और पेशवा उसे पहाड़ी स्थान पर ले जाना चाहते थे। अन्त में पेशवा को ही सफलता मिली। गोदावरी पार करने पर भी जब निजाम को पेशवा नहीं दिखाई पड़े तो, उसे विवश होकर अपनी तोपों और दूसरे भारी-भरकम सामानों को छोड़कर जल्दी-जल्दी औरंगाबाद की ओर बढ़ना पड़ा।

पहाड़ियों का यह प्रदेश बड़ा ऊबड़-खाबड़ था। साथ ही उधर पानी की भी बड़ी कमी थी, परन्तु निजाम करता क्या, उसे इसी मार्ग से औरंगाबाद पहुँचना था। दूसरे मार्ग दूर के थे और सुरक्षित नहीं थे। निजाम जल्दी-जल्दी बढ़ने लगा। जब औरंगाबाद दस कोस रह गया, तब उसके गुप्तचरों ने सूचना दी कि पेशवा की सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया है। खबर सुनकर निजाम हक्का-बक्का रह गया। उसकी चिन्ता बढ़ गई। वह और तेजी से औरंगाबाद की ओर बढ़ने लगा।

पेशवा का मनोरथ सिद्ध हुआ। वे निजाम को जिस स्थान पर लाना चाहते थे, घेर-घारकर वहीं ले आए। उनकी सेना निजाम को चारों ओर घेरकर सिकुड़ती चली आ रही थी। इस समय निजाम की दशा मकड़ी के जाले में फँसी मक्खी की भाँति हो गई थी। धीरे-धीरे मुगल-सेना उस जाल फँसती गई और फिर यह घेरा इतना जटिल हो गया कि निजाम अपनी सहायता के लिए कहीं सूचना भी नहीं भेज सकता था। साव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


धान पेशवा घेरे को और भी जटिल बनाते गए।

पालखेड़ नामक स्थान पर पेशवा ने निजाम को पूर्ण रूप से दबोच लिया। निजाम की सेना को दाना-पानी तक मिलना बन्द हो गया। निजाम की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उसकी हेकड़ी भूल गई। सारी आशाओं पर पानी फिर गया। उसके लिए सुलह के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह गया। युद्ध करने पर उसकी सारी सेना चक्की में गेहूँ की भाँति पिस जाती। विवश निजाम को पेशवा के पास सन्धि के लिए दूत भेजना पड़ा और अन्न-जल के लिए प्रार्थना करनी पड़ी।

पेशवा की अभिलाषा पूरी हुई। उन्होंने वह काम कर दिखाया, जिसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। उन्होंने आज मुगलों पर विजय पाई थी। उन्होंने पानी और भोजन का प्रबन्ध कराया और निजाम को सेना सहित मुन्शी शिवगाम नामक स्थान पर ले आए।

उधर उन्होंने शाहू के पास दूत भेजा और उनसे सन्धि की शर्तें पुछवाईं। उनका विचार पूर्णरूप से निजाम राज्य को खत्म करके मराठा राज्य में मिला लेने का था।

दूसरे दिन निजाम पेशवा के डेरे में आया और उन्हें बहुत-सी वस्तुएँ भेंट कीं। पेशवा ने उसे सम्मानपूर्वक बैठाया। कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के उपरान्त निजाम ने पूछा, "सुलह की क्या-क्या शर्तें होंगी ?"

पेशवा ने उत्तर दिया, "अभी मैं कुछ नहीं बता सकता। सतारा आदमी भेज रखा है। वहाँ से जैसा आदेश आएगा, उसी के अनुसार शर्तें रखी जाएँगी। अभी आपको प्रतीक्षा करनी होगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


निजाम सिर झुकाए बोला, "ठीक है। जैसा आप उचित समझें।" फिर वह पेशवा से अनुमति लेकर चला गया।

सातवें दिन शाहू का पत्र लेकर पेशवा का आदमी लौटा। पत्र की अन्तिम पंक्तियाँ इस प्रकार थीं, "तुम्हें किसी भी दशा में न तो निजाम को किसी प्रकार की क्षति पहुँचानी है और न ही उसकी भावनाओं को ठेस लगानी है। यही मेरा आदेश है।"

पेशवा रात-भर करवटें बदलते रह गए। सब किया-कराया मिट्टी हो गया। पर अब हो भी क्या सकता था? आदेश ही था। दूसरे दिन सन्धि हो गई। फिर भी बाजीराव ने अपनी ओर से एक शर्त रख ही दी। शर्त थी कि निजाम के सारे सूबों में पेशवा की ओर से एक व्यक्ति तैनात किया जाएगा, जिसकी राय के बिना उन सूबों में कोई भी सामाजिक या राजनीतिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



काम नहीं हो सकेगा । निजाम ने स्वीकार कर लिया । सेनाएँ अपनी-अपनी दिशा को मुड़ गईं ।

शाहू ने निजाम के साथ ऐसी दयालुता क्यों दिखाई थी, इसके विषय में जानकारी तो नहीं है, परन्तु यह दयालुता कितनी घातक सिद्ध हुई है, इसे इतिहास आज भी दुहरा रहा है।

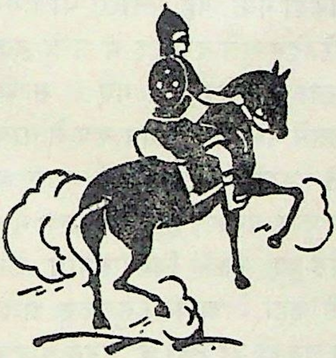

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छः

बाजीराव की इस विजय पर पूरे मराठा राज्य में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सतारा में उनके स्वागत के लिए बड़ी तैयारी होने लगी। पूना में भी उनके आगमन पर जो उत्सव और आनन्द प्रदर्शित किया गया, वह अनोखा था। नगर में दीवाली मनाई गई। दूसरे दिन खुले दरबार में उन्हें नजर पेश की गई और उनकी वीरता के गीत गाए गए। सन्ध्या को नृत्य का आयोजन था, जिसमें मस्तानी विशेष रूप से नाचने वाली थी।

झिलमिलाते झाड़ों के प्रकाश में नृत्य आरम्भ हुआ। अन्य नर्तकियों के नृत्य समाप्त होने पर अन्त में मस्तानी उठी। पेशवा के पास बैठे हुए उनके विश्वासपात्र सेनापति पिलाजी यादव ने धीरे से कहा, "आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि यह नर्तकी केवल नर्तकी ही नहीं है, वरन् वीरता और शिकार में भी इसकी तुलना नहीं। घुड़सवारी तो कमाल की करती है। पूना वालों को इस पर बड़ा गर्व है।"

पेशवा ने तनिक अचम्भे से अपने सेनापति की ओर देखा और पूछा, "इसका नाम ?"

"मस्तानी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


"मस्तानी ?"

"जी श्रीमन्त ! इसका नाचना और गाना देख-सुनकर श्रीमन्त को और भी आश्चर्य होगा। नाचने-गाने में भी यह उतनी ही निपुण है।" सेनापति ने प्रशंसाभरे स्वर से कहा।

"अच्छा !" पेशवा मस्तानी को देखने लगे।

मस्तानी नाचने के लिए खड़ी थी। उसने आगे बढ़कर पेशवा को सलाम किया और बोली, "श्रीमन्त को मैं मीरा-बाई का एक भजन सुना रही हूँ।"

वह पीछे हटी और गाने लगी—

"सखी री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोय !
.........................................."

पेशवा आवाज सुनकर चौंके। स्वर जाना-पहचाना-सा था। उन्होंने मस्तानी को ध्यान से देखा। आँखें वैसी ही थीं। नाक भी वही थी। उनकी दृष्टि उसकी गरदन पर गई। उनका दिया हुआ हार चमक रहा था। वे बड़ी उलझन में पड़ गए। उन्होंने जंगल वाले युवक और मस्तानी की तुलना की। उन्हें विश्वास हो गया कि उन्हें अहमद के भाले से बचाने वाली यह मस्तानी ही है। उस समय यह मर्दाने वेश में थी।

मस्तानी बड़े हाव-भाव के साथ नाच-नाचकर गा रही थी। दरबार में सन्नाटा छा गया था। लोग झूम रहे थे। मस्तानी के कण्ठ में जादू था। अन्त में भजन समाप्त करके वह पेशवा के सामने आ बैठी।

पेशवा ने अपने गले का हार निकालकर उसके गले में डाल दिया और कहा, "यह हार तुम्हारे नाचने और गाने पर पुरस्कार है। समझ में आया ?" वह मुस्कराने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


पेशवा की बातों में जो छिपा भेद था, उसे मस्तानी समझ गई। इसलिए उसने भी उसी प्रकार का उत्तर दिया, "मेरा सौभाग्य है कि श्रीमन्त ने मुझे अभी तक याद रखा!"

वह उठकर खड़ी हो गई और दूसरा भजन सुनाने लगी।

एक-एक करके उसने चार भजन सुनाए। इसके बाद पेशवा उठ खड़े हुए। दरबार उठ गया।

मस्तानी की वीरता, उसकी सुन्दरता और नाचने-गाने वाली कला ने पेशवा बाजीराव को मोह लिया था। वह रात भर नाना प्रकार की बातें सोचते रहे, परन्तु अन्त में उन्होंने मस्तानी से विवाह करने का निर्णय कर ही लिया।

दूसरे दिन वह सतारा नहीं गए, रुक गए।

आधी रात को वे मुँह पर कपड़ा लपेटे मस्तानी के घर पहुँचे। दरवाजे पर थपकी दी। मस्तानी की माँ अभी तक रेहल पर कुरान रखे पढ़ रही थी। दरवाजे पर थपकी की आवाज सुनकर वह चौंकी। आकर दरवाजा खोला, "कहिए?" उसने पूछा।

पेशवा बोले, "कुछ विशेष कार्य है। अन्दर बैठकर बताना चाहता हूँ।"

"आइए।" बिना किसी हिचक के मस्तानी की माँ ने उन्हें कमरे में ला बैठाया।

पेशवा ने बैठते हुए पूछा, "आप मस्तानी की माँ हैं?"

"जी हाँ! और आप?"

पेशवा ने अपने मुँह का कपड़ा खोल दिया।

मस्तानी की माँ चौंक उठी, "पेशवा साहब! इतनी रात को? श्रीमन्त ने बाँदी को बुलवा भेजा होता!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


पेशवा मुस्कराते हुए बोले, "कुछ काम ऐसे भी होते हैं जिनके लिए स्वयं जाना पड़ता है। मस्तानी को बुलवाइए। मैं उससे कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

"जी।" कहकर मस्तानी की माँ भीतर चली गई।

थोड़ी देर बाद अकेली मस्तानी सिर झुकाए कमरे में आई। पेशवा ने बैठने को कहा। वह बैठ गई। इस समय उसे बड़ी लज्जा आ रही थी। पेशवा होठों पर मुस्कान बिखेरते हुए बोले, "तुमने मुझे खूब बुद्धू बनाया, क्यों?"

मस्तानी ने धीरे से उत्तर दिया, "क्या करती? अगर ऐसा न करती तो श्रीमन्त के इतने निकट आने का सौभाग्य कहाँ प्राप्त होता! पर श्रीमन्त ने इतनी रात में कैसे कष्ट करने की कृपा की है?"

"अब मैं तुम्हें बुद्धू बनाने आया हूँ। मेरी बारी भी तो आनी चाहिए।" पेशवा हँस पड़े।

मस्तानी मन-ही-मन हँसती हुई चुप रही।

पेशवा ने पुनः कहा, "मैं तुम्हारे पास एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ

मस्तानी चौंककर बोली, "श्रीमन्त आज्ञा करें!"

पेशवा ने बिना झिझके कहा, "मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ।"

मस्तानी ने सिर ऊपर उठाया और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें फाड़कर पेशवा को निहारने लगी। असम्भव भी सम्भव हो सकता है, यह उसे आज समझ में आया। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, फिर भी वह मौन रही।

पेशवा फिर बोले, "तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


हो रहा होगा ?"

मस्तानी बोली, "विश्वास हो भी रहा है और नहीं भी हो रहा है, श्रीमन्त! मैं मुसलमान हूँ···मुसलमानों में भी नीच, एक वेश्या की लड़की। आप ब्राह्मण हैं और साथ ही मराठा राज्य के पेशवा भी हैं। आपका सम्मान, आपकी ख्याति···"

पेशवा बीच में बोल उठे, "इन सब बातों की जानकारी मुझे अच्छी तरह है, मस्तानी, मैं हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद नहीं मानता।"

"श्रीमन्त न मानते हों, लेकिन समाज तो मानता है। वह आपको कैसे अनुमति देगा ?"

"मुझे उसकी अनुमति की आवश्यकता नहीं है।" पेशवा ने हाथ झटककर कहा ? मैं पुरुषार्थ पर विश्वास करता हूँ और हृदय के सम्बन्ध को सच्चा सम्बन्ध मानता हूँ। सब कुछ सोचने-विचारने के बाद भी मेरे हृदय ने तुमसे विवाह करने का निर्णय किया है।"

कुछ देर चुप रहकर मस्तानी बोली, "श्रीमन्त को सीख देने की क्षमता तो मुझमें नहीं है, फिर भी मेरा अनुरोध है, श्रीमन्त, इस प्रश्न पर कुछ और सोच लें। इस कार्य से श्रीमन्त का समाज श्रीमन्त के विरुद्ध हो जाएगा और वह नाना प्रकार के अड़ंगे खड़ा करने लगेगा।"

पेशवा ने दृढ़ स्वर से कहा, "उससे उसकी हानि होगी, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। मैं जिस लगन के साथ अपने कर्तव्यों का पालन इस समय कर रहा हूँ, उसी लगन के साथ बाद में भी करता रहूँगा। यदि समाज सहयोग देगा तो उसकी उन्नति होगी और न देगा तो पछताएगा। पर अब कोई शक्ति तुमको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


मुझसे अलग नहीं रख सकती है।"

मस्तानी ने एक दूसरा प्रश्न उठाया, "सो तो ठीक है, श्रीमन्त, यह तो मेरे लिए महान् सौभाग्य की बात है, लेकिन मैं समझती हूँ कि श्रीमन्त ने एक जटिल प्रश्न पर विचार ही नहीं किया है।"

"कौन-सा प्रश्न ?"

मस्तानी ने हिचकिचाकर कहा, "श्रीमन्त की धर्म-पत्नी के विरोध वाला प्रश्न। क्या वे ऐसा करने के लिए आपको अनुमति दे सकेंगी ? मैं तो समझती हूँ, कभी नहीं दे सकेंगी। मुझे प्राप्त करके आप उन्हें गँवा बैठेंगे।"

पेशवा हँसने लगे और खड़े होते हुए बोले, "ऐसा कुछ नहीं होगा। तुम निश्चिन्त रहो। अब मैं जा रहा हूँ, कल सतारा चला जाऊँगा। वहाँ से लौटने पर मैं बड़ी धूम-धाम के साथ तुम्हारे संग विवाह करूँगा। तुम तैयार रहना।"

मस्तानी उन्हें दरवाजे तक छोड़ने आई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## सात

बुन्देलखण्ड के अठहत्तर वर्षीय राजा छत्रसाल बड़े वीर और पराक्रमी व्यक्ति थे। शिवाजी की वीरता से प्रभावित होकर वे अपने जीवन के आरम्भ से ही मुगलों के विरुद्ध लड़ते रहे। उन्होंने मुगलों को कभी अपने राज्य में घुसने नहीं दिया। यहाँ तक कि औरंगजेब जैसे शक्तिशाली और अत्याचारी सम्राट् को भी उन्होंने नाकों चने चबवा दिए थे। औरंगजेब मरते दम तक प्रयत्न करता रह गया, पर बुन्देलखण्ड पर उसका अधिकार न हो सका था।

लेकिन इधर कुछ वर्षों से इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद खाँ बंगश ने छत्रसाल को बहुत परेशान कर रखा था। आए दिन उनसे बंगश की मुठभेड़ हुआ करती और उन्हें बार-बार पराजित होकर इधर-उधर भागना पड़ता था। यह सब उनके बुढ़ापे के कारण हो रहा था। जवानी की बात कुछ और होती है, बुढ़ापे की कुछ और, फिर भी छत्रसाल अपने कर्तव्य पर दृढ़ थे। वे जीते जी बुन्देलखण्ड पर अत्याचारियों का झण्डा लहराता नहीं देख सकते थे। वे बार-बार हारते और बार-बार सेना एकत्र करके बंगश का सामना करते।

उधर बंगश ने भी निश्चय कर लिया था कि इस बार छत्रसाल की सत्ता पूर्णरूप से मिटा कर बुन्देलखण्ड को इलाहाबाद के सूबे में मिला लिया जाए। रोज-रोज का झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्यों रखा जाए ?

उसने भयंकर तैयारी के साथ बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई कर दी। सामना करने के लिए राजा छत्रसाल आए। बंगश ने उन्हें पराजित कर दिया। छत्रसाल ने पीछे हट कर फिर सामना किया। बुन्देला सैनिकों ने युद्ध में कोई कसर उठा न रखी, पर छत्रसाल को सफलता न मिली। उन्होंने पीछे हट कर जैतपुर के दुर्ग में शरण ली।

बंगश ने दुर्ग घेर लिया और दुर्ग के अन्दर सामान जाना बन्द कर दिया। दिन बीतने लगे। दुर्ग के अन्दर की रसद धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। कुछ दिनों के बाद भोजन के बिना सबकी दशा बिगड़ने लगी। छत्रसाल ने भूख से तड़प-तड़प कर मरने की अपेक्षा बैरियों से लड़कर मरना उत्तम समझा। उन्होंने अपने सैनिकों से राय ली। सभी लड़ने के पक्ष में थे। छत्रसाल ने एक सैनिक को पत्र लिखकर दिया, बोले, "यह पत्र पेशवा बाजीराव को देना है। पहुँच सकोगे वहाँ तक ?"

सैनिक ने सिर झुकाकर कहा, "जब तक इस तन में रुधिर बहता रहेगा, तब तक महाराज का यह सेवक सतारा के रास्ते पर बढ़ता ही जाएगा।"

छत्रसाल ने उसकी पीठ ठोंकी और फिर सैनिकों को ललकारते हुए वे बाहर निकलकर बंगश की सेना पर टूट पड़े। पत्र-वाहक भी बाहर निकला और दुश्मनों की आँखों से बचता हुआ सतारा की ओर उड़ चला।

मुट्ठी भर बुन्देले बंगश की विशाल सेना के सामने कब तक टिक सकते थे, फिर भी उन्होंने युद्ध में मुगलों के छक्के छुड़ा दिए। छत्रसाल ने तो यमराज का रूप धारण कर लिया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


उनकी तलवार गाजर-मूली की भाँति दुश्मनों का सिर काट रही थी। पर कब तक ? उनके शरीर के अंग-अंग पर घाव के निशान बन चुके थे। सारा शरीर लहूलुहान हो रहा था। अन्त में उनके पैर लड़खड़ाये और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। बंगश ने उन्हें बन्दी बना लिया।

उधर दिन और रात का ध्यान किए बिना छत्रसाल का पत्र-वाहक सतारा पहुँच ही गया। सतारा में बड़ी धूम-धाम थी। पेशवा के स्वागत में नित्य नाना प्रकार के आयोजन होते रहते। पत्र-वाहक को पेशवा से मिलने में कठिनाई हुई, परन्तु अन्त में उनसे भेंट हो गई। उसने छत्रसाल का पत्र उन्हें दिया। पेशवा ने पत्र खोलकर देखा। उसमें केवल दो पंक्तियाँ लिखी थीं—

जो गति ग्राह गजेन्द्र की, सो गति जानहु आज।
बाजी जात बुन्देल की, राखो बाजी लाज॥

पेशवा ने सिर उठाकर पत्र-वाहक की ओर देखा। पत्र-वाहक ने सारा हाल कह सुनाया। हाल सुनकर पेशवा की आँखों में पानी भर आया। उन्होंनें उसी समय सेनापति पिलाजी यादव को बुलाया और सेना की तैयारी का आदेश दे दिया।

पेशवा के सामने उनका कर्तव्य पहले था। वे अपनी हँसी-खुशी, सुख, आनन्द, धन-दौलत, और अन्त में प्राण तक भी कर्तव्य-पालन की पूर्ति में न्यौछावर कर सकते थे। वे मस्तानी के विवाह को भी भूल गए और दूसरे ही दिन बुन्देलखण्ड की ओर प्रस्थान कर दिया।

रात-दिन यात्रा करते हुए पेशवा महोबा पहुँच गए। गोर-चार पर्वत के समीप छत्रसाल के लड़के ने पेशवा से भेंट की और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

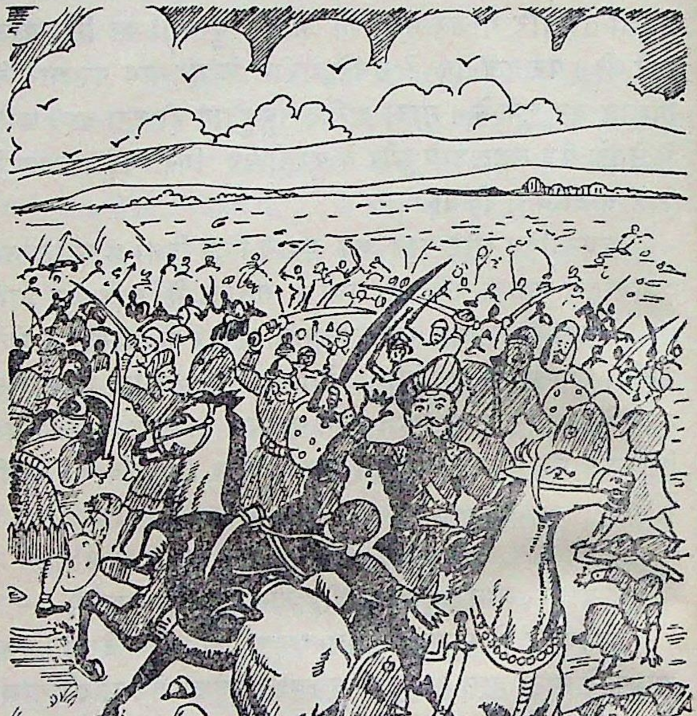

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


पिता के बन्दी होने का समाचार सुनाया। पेशवा को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने रात भर रुककर दूसरे ही दिन बंगश पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया।

रात समाप्त हो चली थी। सवेरा होने को आया। पेशवा उठकर रावटी से बाहर आए और कुछ सोचते हुए टहलने लगे। तब तक एक सैनिक ने आकर निवेदन किया, "श्रीमन्त से राजा छत्रसालजी मिलना चाहते हैं।"

"छत्रसालजी ?" पेशवा ने चकित होकर पूछा।

"जी श्रीमन्त !"

"कहाँ हैं ?"

"बाहर।"

पेशवा स्वयं दौड़े।

पेशवा को देखते ही छत्रसाल ने आगे बढ़कर उन्हें गले से लिपटा लिया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मारे आनन्द के उनके मुँह से आवाज तक नहीं निकल रही थी।

जब पेशवा अलग हुए तो छत्रसाल ने अपनी पगड़ी उतारी और पेशवा के पैरों पर रखने ही वाले थे कि पेशवा ने छत्रसाल के हाथ पकड़ लिए और कहा, "राजा साहब, मुझे लज्जित न करें। मुँह दिखाने योग्य नहीं रह जाऊँगा।"

छत्रसाल उसी प्रकार रोते हुए बोले, "गज को भगवान इसी प्रकार मिले थे, पेशवा साहब, आपने बुन्देलों की नाक रख ली। निर्बलों के बलराम मिल गए।"

पेशवा उन्हें हाथ का सहारा देकर अपनी रावटी में ले आए और आदर सहित आसन पर बैठाकर स्वयं नीचे बैठ गए। उन्होंने कहा, "आज आपकी सेवा में अपने को पाकर धन्य हुआ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


राजा साहब ! यह सौभाग्य सबको प्राप्त नहीं हो सकता। अगर गणपति ने चाहा तो अत्याचारी मुगल इस भूमि पर दुबारा पैर नहीं रखने पाएँगे। आप यहाँ विश्राम करें और मुझे अवसर दें कि मैं आपकी सेवा करके अपने स्वर्गीय स्वामी महाराज शिवाजी की आत्मा को सन्तुष्ट कर सकूँ।"

छत्रसाल चुप रहे।

कुछ क्षण रुककर पेशवा ने मुस्कराते हुए कहा, "राजा साहब ने बंगश को अच्छा चकमा दिया।"

छत्रसाल मुस्कराए, "क्यों न देता ?" मेरे गुरु शिवाजी ही तो थे। जब वे औरंगजेब के बन्दीगृह से निकल सकते थे तो क्या मैं बंगश के बन्दी-गृह से भी नहीं निकल सकता ?"

पेशवा हँसने लगे, "बिल्कुल निकल सकते हैं और निकल भी आए हैं।"

फिर दोनों में युद्ध-सम्बन्धी बातें होने लगीं।

तीसरे दिन पेशवा ने आगे बढ़कर मुहम्मद खाँ बंगश को ललकारा।

बंगश तैयार था। वह सामना करने के लिए आगे आया। पेशवा ने आकाश में अपनी तलवार चमकाते हुए कहा, "हर हर महादेव !"

उनके तीस हजार घुड़सवारों ने कहा, "हर हर महादेव, हर हर महादेव !"

उधर बंगश के सैनिकों ने भी नारे लगाए, "अल्लाहो अकबर।" और जूझ पड़े।

घमासान युद्ध होने लगा। हजारों के सिर धड़ से अलग हो गए। जमीन लाल हो उठी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



पेशवा ने पुनः अपने सैनिकों को ललकारा। फिर क्या था? मराठों ने प्रलय मचा दी।

बंगश के सैनिक पीछे हटने लगे। बंगश ने बढ़ावा दिया, परन्तु जब निजाम ने ही घुटने टेक दिए थे तो बंगश किस गिनती में था?

बंगश की सेना पीछे हटती ही गई। विवश होकर बंगश को भी अपनी जान बचानी पड़ी और बहुत पीछे आकर रुका। उसने तुरन्त दिल्ली-सम्राट के पास सहायता के लिए खबर भेजी और साथ ही अपने लड़के कयूम खाँ के पास भी आदमी दौड़ाए।

कयूम खाँ फौरन एक बड़ी सेना लेकर अपने पिता की रक्षा के लिए दौड़ा। पेशवा के गुप्तचरों ने सूचना दी। अपनी कुछ सेना वहीं छोड़कर शेष सेना के साथ पेशवा कयूम खाँ से जा भिड़े।

वे दोनों मुगल सेनाओं को मिलने नहीं देना चाहते थे। पेशवा ने विकट युद्ध किया। कयूम खाँ को अपने प्राणों के लाले पड़ गए। वह सब कुछ छोड़कर भाग चला। पेशवा विजयी हुए। बहुत अधिक सामान हाथ लगा, जिसमें तीन हजार घोड़े और तेरह हाथी विशेष थे।

लौटकर पेशवा ने बंगश को घेर लिया। मुगलों को भोजन तक मिलना बन्द हो गया। बंगश की हेकड़ी भूल गई। क्या करे, क्या न करे—वह अब निर्णय नहीं कर पा रहा था। दिल्ली से सहायता आने की आशा पर कुछ दिनों तक और रुका। सेना की दशा और बिगड़ गई। दिल्ली से सहायता नहीं आई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



बंगश को आन से अधिक अपनी जान प्यारी थी। उसने पेशवा के पास सन्धि-वार्ता के लिए अपना दूत भेजा। पेशवा ने कहा, "मुहम्मद खाँ बंगश सकुशल इलाहाबाद लौटाए जा सकते हैं, लेकिन उन्हें लिखित प्रतिज्ञा करनी होगी।"

"वह क्या!"

पेशवा ने शर्त बताई, "उन्हें प्रतिज्ञा करनी होगी कि भविष्य में वह फिर कभी बुन्देलखण्ड पर आक्रमण नहीं करेंगे। सपूर्ण बुन्देलखण्ड पर एकमात्र राजा छत्रसाल का अधिकार होगा।"

दूत लौट गया और दूसरे दिन बंगश से प्रतिज्ञा लिखवा लाया।

सन्धि हो गई। पेशवा ने बंगश को इलाहाबाद लौट जाने का रास्ता दे दिया।

उसी जैतपुर के दुर्ग में बड़े सज-धज से दरबार लगा। वृद्ध छत्रसाल फूले नहीं समा रहे थे। उन्होंने अपने दोनों पुत्रों से पेशवा के चरण-स्पर्श कराए और गद्गद कंठ से बोले, "पेशवा साहब! आज से इनकी देख-रेख का भार आप पर है। अब आप ही इनके पिता हैं, भाई हैं और संरक्षक हैं। मेरा काम पूरा हो गया। अब मुझे अवकाश चाहिए।"

पेशवा ने बढ़कर छत्रसाल के पैर छुए और सदैव दोनों राजकुमारों की छोटे भाइयों की भाँति देख-रेख करते रहने की कसम खाई।

सारा दरबार जयजयकार से गूंज उठा। छत्रसाल नें उसी समय बुन्देलखण्ड के तीन हिस्से किए और एक-एक भाग तीनों को दिया। पेशवा के हिस्से में कालपी, हाटा, सागर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

सिरोंज, कुच और हृदयनगर का भाग पड़ा।

एक सप्ताह रुकने के उपरान्त पेशवा ने छत्रसाल से विदा ली। छत्रसाल ने उन्हें गले लगाकर बार-बार आशीर्वाद दिया। पेशवा की आँखें भी भर आई थीं। वे छत्रसाल के पैर स्पर्श कर घोड़े पर जा बैठे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## आठ

बाजीराव पेशवा की पत्नी काशीबाई पूना आ गई थी और पति के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। पेशवा बुन्देलखण्ड से वापस आए। धूम-धाम से स्वागत-सत्कार हुआ।

बहुत पहले से पेशवा एक महल पूना में बनवा रहे थे, वह भी बनकर तैयार हो गया था। शुभ दिन देखकर गृहप्रवेश हुआ। पेशवा परिवार सहित महल में आ गए। महल का नाम 'शनिवार वाड़ा' रखा गया।

अभी तक पेशवा मस्तानी से मिलने नहीं जा सके थे। उधर मस्तानी भी उनके आगमन की नित्य प्रतीक्षा कर रही थी। उसे पेशवा से सच्चा प्रेम था। साथ ही उसे विश्वास था कि पेशवा भी उससे उसी प्रकार प्रेम करते हैं, फिर भी उनके न आने से दिमाग में उलझन तो बढ़ ही गई थी। पूना में रहने पर भी अब तक पेशवा उससे मिलने नहीं आए, इसका कारण वह समझ नहीं पा रही थी। उसके हृदय में बड़ी पीड़ा थी, पर उस पीड़ा को सहन करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था।

आज पेशवा मस्तानी के यहाँ जाने वाले थे, परन्तु किसी कारणवश उन्हें फिर रुक जाना पड़ा।

रात में भोजन के उपरान्त जब वे सोने को हुए तो काशी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


बाई ने पूछा, "क्या नींद आने लगी ?"

पेशवा ने करवट बदली, 'नहीं तो। क्यों, कुछ पूछना चाहती हो ?"

"हाँ।"

"कहो, क्या है ?" पेशवा ने आँखें खोल दीं।

काशीबाई ने पूछा, "मुझे विश्वास तो नहीं है, फिर भी मैंने सोचा कि आप से पूछकर आपको इस अफवाह की जानकारी करा दूँ। क्या आप मस्तानी नाम की किसी मुसलमान वेश्या से विवाह करने जा रहे हैं ?"

पेशवा ने बिना किसी हिचक के बड़ी सरलता से कह दिया, "हाँ, काशी ! यह अफवाह नहीं, सत्य है।"

काशीबाई अपने पति को अवाक् देखती रह गई। उसे अपने अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने क्षण भर पेशवा को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


निहारते रहने के बाद फिर पूछा, "मुसलमान वेश्या के साथ ?"

पेशवा होठों में मुस्कराए, "तुम्हें उसके मुसलमान होने से आश्चर्य हो रहा है या मेरी दूसरी शादी से ?"

काशीबाई बोली, "मुझे दूसरी शादी से क्यों आश्चर्य होने लगा ? आप दस-पाँच शादियाँ कर लें, मेरे लिए कोई अन्तर नहीं पड़ सकता। पर आप मुसलमान, वह भी वेश्या से विवाह करेंगे, इसे स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था। क्या आपको अपनी शक्ति पर इतना घमण्ड हो गया है कि न ईश्वर का भय रहा और न धर्म-समाज का ? एक नीच औरत के पीछे आप बाप-दादों के नाम पर कलंक लगाकर नरक के भागी बनने को तैयार हो उठे हैं ? आपकी बुद्धि भ्रष्ट तो नहीं हो गई है ? ऐसा अनर्थ ? राम-राम ! जिस मुसलमान जाति को मिटाने के लिए आपने बीड़ा उठाया है, उसी जाति की लड़की को अपनी स्त्री बना रहे हैं ! मैं नहीं···"

पेशवा ने बीच में टोक दिया, "तुमने गलत समझा है, काशी ! मैंने मुसलमान जाति को नहीं वरन् मुसलमान अत्याचारियों को मिटाने का बीड़ा उठाया है। हिन्दू-मुसलमान में मैं कोई भेद नहीं बरतता।"

काशीबाई ने तनिक चिढ़कर कहा, "तो आप भी मुसलमान क्यों नहीं हो जाते ? फिर किसी को कुछ कहने का अवसर नहीं रह जाएगा। मस्तानी के रूप का जादू आप पर यहाँ तक छा गया है कि आप अपना धर्म-कर्म तक भूल गए ?"

पेशवा हँसने लगे, "तुम कहोगी तो मुसलमान भी बन जाऊँगा, लेकिन पहले जरा ठण्डे दिमाग से कुछ सोचने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


कोशिश तो करो। मैं तुमसे पूछता हूँ कि हिन्दुओं और मुसलमानों को बनाने वाला एक है या दो ?"

काशीबाई ने कहा, "एक।"

"क्या हम हिन्दुओं के शरीर की बनावट और मुसलमानों के शरीर की बनावट में कोई अन्तर है ?"

"नहीं।"

पेशवा बोले, "तब हिन्दू और मुसलमान में भेद कैसा ? उन्हें नीची नजर से देखने की क्या तुक ? उनसे घृणा क्यों की जाए ? धर्म की रूढ़ियों को न पकड़ो, काशी, जो वास्तविकता है, उसे समझने का प्रयत्न करो।"

काशीबाई ने और चिढ़कर कहा, "वास्तविकता के विषय में आप जैसी समझ मेरे पास कहाँ हो सकती है, लेकिन मैं पूछती हूँ कि फिर इन मुसलमानों से लड़ने की क्या आवश्यकता है ? सारे हिन्दू मुसलमान क्यों नहीं बन जाते ? हमारे-उनके बीच में यही झगड़ा विशेष है न ? आपको भी रात-दिन मारे-मारे फिरने से छुटकारा मिल जाएगा।"

"अगर सबकी बुद्धि में यह बात धँस जाए तो बहुत उत्तम है। फिर हिन्दू-मुसलमान तो क्या, सारा संसार एक धागे में बँध सकता है। तब दुनिया में दुःख नाम की कोई चीज नहीं रह जाएगी। पर धूर्त और धर्म के ढोंगी ठेकेदार ऐसा होने कहाँ दे रहे हैं ? ऐसा होने पर उनके सुख और सम्मान में कमी नहीं आ जाएगी ?"

काशीबाई ने व्यंग्य किया, "तो आप धूर्तों और ढोंगी ठेकेदारों को चुनौती देकर संसार को एक धागे में बाँधने जा रहे हैं, क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



पेशवा काशीबाई के भावों को समझते हुए भी उसी प्रकार मुस्कराकर बोले, "इतना समर्थ कहाँ हूँ, काशी, अकेला चना कहीं भाड़ फोड़ सका है? लेकिन हाँ, कुछ-न-कुछ आवाज करके अपना विरोध तो प्रकट कर ही सकता है! मैं वही कर रहा हूँ।"

काशीबाई ने झुँझलाकर कहा, "फिर ठीक है। आप यह सब करने के चक्कर में अपने जीवन के संग-संग बच्चों के भी जीवन को घृणित और अपमानित कर दीजिए। आप तो अपनी तलवार के बल पर अभी मनमानी कर रहे हैं, पर जिस दिन यह शक्ति न रह जाएगी, उस दिन वही ठेकेदार आपकी कैसी दुर्दशा करेंगे, इसे भी आपने कभी सोचा है?"

पेशवा कठोर होकर बोले, "तो तुम्हारी सलाह है कि मैं पाप को पाप समझ कर भी इसलिए उसके विरुद्ध आवाज न उठाऊँ कि इससे मेरे व्यक्तिगत और पारिवारिक सुखों का अपहरण होता है?"

"नहीं! सुखों के अपहरण होने का प्रश्न नहीं है, प्रश्न है अपने धर्म, समाज और बहुमत का। बहुमत जिसे पाप कहेगा, वह पाप है और जिसे पुण्य कहेगा, वह पुण्य है। आपकी अकेली आवाज कुछ नहीं कर पाएगी।"

पेशवा गम्भीर होकर बोले, "यह तुम्हारी नासमझी है। भगवान् कृष्ण ने सत्य का सहारा पकड़कर महान् शक्तिशाली कौरवों का विरोध किया और अन्त में पाण्डवों को विजयी बनाकर सिद्ध कर दिया कि अच्छे मार्ग पर चलने वाला सदा विजयी होता है। ऐसा हुआ या नहीं? तुम्हीं सोचो, कौरवों के सामने पाण्डवों की क्या बिसात थी? बहुमत तो कौरवों के साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


ही था ?"

काशीबाई के पास अब कोई उत्तर नहीं था, पर वह अपनी हठधर्मी को भी नहीं छोड़ सकती थी। झुँझलाकर बोली, "बहस करने से कोई लाभ नहीं। मुझे जो कुछ कहना था, सो कह दिया। आगे आपकी जो इच्छा हो सो कीजिए।" और वह मुँह फेरकर पलँग पर लेट गई।

पेशवा ने भी बात नहीं बढ़ाई। वे सोने का प्रयत्न करने लगे।

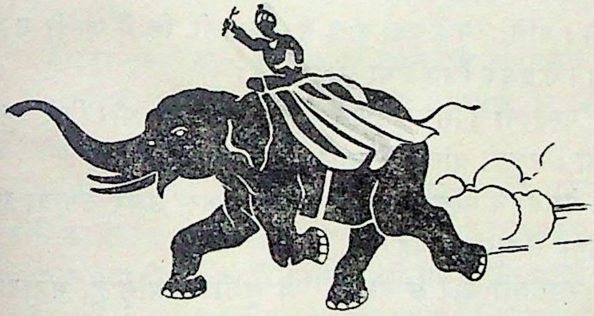

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

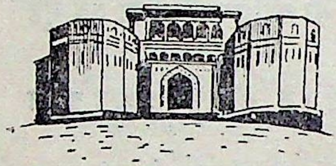

## नौ

पेशवा मस्तानी से विवाह करने के निश्चय पर दृढ़ थे। उन्हें किसी की चिन्ता नहीं थी। दूसरे दिन वे दोपहर में स्वयं मस्तानी के घर गए। मस्तानी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसका अंग-अंग झूम उठा। पेशवा को वह अपने कमरे में ले आई और उन्हें पलंग पर बैठाकर स्वयं उनके पैरों के पास बैठ गई। पेशवा ने उसका हाथ पकड़कर अपने बगल में बैठा लिया। बोले, "मुझे बड़ा दुःख है, मस्तानी, कि मैं जल्दी न आ सका। मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

मस्तानी ने सिर उठाकर पेशवा को देखा और फिर झुका लिया। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे।

पेशवा ने मस्तानी की ठोड़ी पकड़कर ऊपर उठाया और आश्चर्य से पूछा, "यह क्या ?"

मस्तानी धीरे से बोली, "ये खुशी के आँसू हैं, महाराज, मेरे जैसा भाग्य इस संसार में किसका है ? इस वेश्या को भी ऐसा..."

पेशवा ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया, "बस, आगे नहीं। भविष्य में फिर ऐसी बात मुँह से न निकालना। अब मस्तानी वेश्या नहीं, पेशवा की रानी है।" पेशवा खड़े हो गए। बोले,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



"तुमसे केवल यही कहने आया था। अब जा रहा हूँ। तैयार रहना, कल 'शनिवार वाड़ा' में आना है।" उन्होंने उसके कपोलों को थपथपा दिया और तेजी से बाहर निकल गए।

मस्तानी बैठी-की-बैठी रह गई। माँ ने आकर पूछा। उसने बता दिया। बुढ़िया प्रसन्न मन बार-बार ऊपर हाथ उठाकर कुछ बुदबुदाती हुई अपने कमरे में चली गई।

दूसरे दिन मस्तानी बड़ी धूम-धाम और आवभगत के साथ 'शनिवार वाड़ा' में लाई गई। पेशवा स्वयं उसकी अगवानी के लिए महल के द्वार पर खड़े थे। उन्होंने बड़े सम्मान के साथ मस्तानी को उतारा। वह फूली नहीं समा रही थी। पेशवा मस्तानी को शीशमहल में ले आए। मस्तानी चारों ओर आँखें फाड़कर देखती हुई बोली, "इसे आपने बड़ा सुन्दर बनवाया है।"

पेशवा मुस्कराए, "लेकिन यह तुमसे कम सुन्दर है!"

मस्तानी ने सिर झुका लिया। पेशवा थोड़ी देर में आने को कहकर बाहर चले गए।

नगर में बड़ी हलचल थी। इस प्रकार की घटना का किसी को स्वप्न में भी अनुमान नहीं था। एक मुसलमान वेश्या को पेशवा बाजीराव पत्नी बनाकर रखें, यह महान् अनर्थ ही तो था! लोग आपस में कह रहे थे—"पेशवा ने हिन्दू-धर्म पर कलंक का टीका लगा दिया। सत्यानाश कर दिया। मुसलमानों को देश से बाहर निकालने का बीड़ा उठाने वाला स्वयं एक मुसलमान से ब्याह करे, महान् पाप है! उन्हें ईश्वर क्षमा नहीं कर सकता।"

इस तरह की बातें नगर में बड़ी सरगर्मी से चल रही थीं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


सब कानाफूसी के रूप में। खुलकर कुछ कहने का साहस किसी में नहीं था।

सन्ध्या समय पेशवा के आदेश पर 'गणेश दीवानखाना' में एक विशेष दरबार लगा। हाल नगर निवासियों से ठसाठस भर गया। इस विशेष दरबार के लगने का कारण सबको मालूम था। थोड़ी देर बाद पेशवा के आगमन की सूचना दी गई।

पेशवा आए। मसनद पर बैठते हुए उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और ऊँचे स्वर में बोले—"आप सबको इस समय बुलाने का एक विशेष कारण है। मुझे बताया गया है कि मस्तानी के महल में आने के कारण आप लोगों के बीच धर्म-अधर्म के प्रश्न को लेकर मेरे विरुद्ध नाना प्रकार की बातें होने लगी हैं। इसलिए मैंने सोचा कि आपके विचारों को सुनूँ और फिर अपने तर्क से सिद्ध कर दूँ कि जो कुछ मैंने किया है, वह उचित है। मैं शक्ति द्वारा आपके मुँह नहीं बन्द करना चाहता। इसे आप भली-भाँति समझ लें। तभी मेरे-आपके बीच पहले वाली प्रेम-भावना बनी रहेगी।"

पेशवा ने इधर-उधर देखकर आगे कहा, "मस्तानी का चरित्र पवित्र है। इसे आप सब जानते हैं। ईश्वर ने उसे रूप-गुण के साथ जो निर्भीकता और वीरता दे रखी है, वह भी अनोखी है। उसके साहसपूर्ण कार्यों के सम्बन्ध में भी कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। रहा प्रश्न अब हिन्दू और मुसलमान का, सो घरेलू है। इसे किसी भी रूप में निपटाया जा सकता है। मन में पवित्रता होनी चाहिए, फिर किसी बात की चिन्ता नहीं। शुद्धि द्वारा कोई भी मुसलमान हिन्दू बनाया जा सकता है। आप..."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

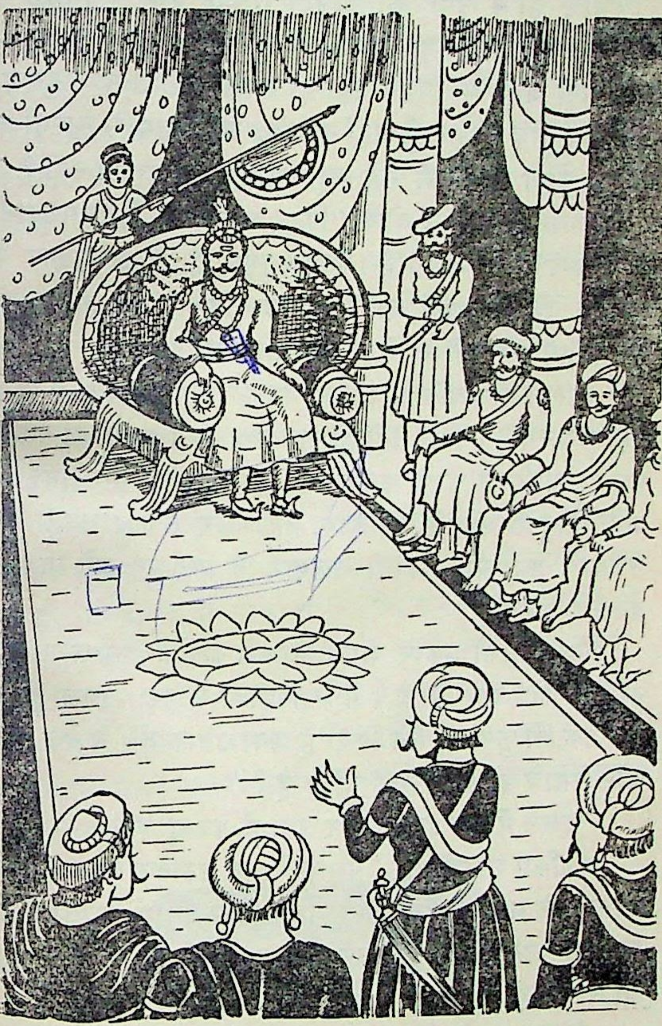

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बीच ही में पूना का ढोंगी पण्डित ईश्वरदत्त शास्त्री खड़ा हो कर चिल्ला पड़ा, "यह असम्भव है, पेशवा साहब ! शुद्धि द्वारा जाति-परिवर्तन नहीं हो सकता । विशेषकर मुसलमानों की शुद्धि तो हो ही नहीं सकती । उन्हें हमारे शास्त्रों के अनुसार स्पर्श करना भी पाप कहा गया है । यह सम्भव नहीं है।"

पेशवा मुस्कराकर बोले, "किन्तु शास्त्रीजी, मैं तो मस्तानी को ब्राह्मण बनाने वाला हूँ । मेरा अनुमान है कि इस प्रकार के कार्यों से देश और धर्म, दोनों की उन्नति होगी। समय को परखते हुए हमें इसी रास्ते को अपनाना चाहिए ।"

शास्त्री हाथ-पाँव और सिर झटकता हुआ बोला, "यह महान् अनर्थ है । कभी नहीं हो सकता । आप अपनी शक्ति के बल पर अभी जो चाहें, कर लें, पर हमारा धर्म मस्तानी को कभी हिन्दू के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता···नहीं कर सकता ! क्या आप अपनी तलवार के बल पर हमें विधर्मी बनाना चाहते हैं ?

पेशवा उसी प्रकार शान्त भाव से बोले, "शास्त्रीजी को व्यर्थ में क्रोध आ गया है । मैं शास्त्रीजी से पूछ सकता हूँ कि अब तक जो कुछ भी मैंने किया है, क्या उन कार्यों से देश, धर्म और समाज को लाभ नहीं पहुँचा है ?"

"इससे मैं कब इन्कार कर रहा हूँ, परन्तु···"

"रुकिए शास्त्रीजी!" पेशवा ने हाथ उठाकर कहा, "अगर मस्तानी के साथ रहकर भी मैं उसी प्रकार कार्य करता हूँ तो क्या आप उसे पसन्द नहीं करेंगे या उनसे देश, धर्म और समाज को लाभ नहीं पहुँचेगा ?"

ईश्वरदत्त सोचने लगा । उसके पास कोई जवाब नहीं था ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


पेशवा ने फिर कहा, "असत्य को सत्य का रूप देकर धर्म की ओट में हिन्दू धर्म के महान आदर्शों पर कीचड़ न उछालिए शास्त्रीजी, आप जैसे पण्डितों ने ही छत्रपति शिवाजी के मार्ग में रोड़े अटकाकर उनके प्राण ले लिए थे। ईश्वर की कृपा से अब फिर सँभलने का अवसर आया है। सँभलिए, वरना बाद में पछताना पड़ेगा!"

उनकी बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। सबने मन ही मन पेशवा का समर्थन किया। परन्तु पाखण्डी ईश्वरदत्त कब मानने वाला था, वह उसी प्रकार चिल्लाता हुआ बोला, "अगर आपको मस्तानी से बहुत लगन है तो रखैल की तरह क्यों नहीं रख लेते! उसे ब्राह्मण बनाकर पत्नी की भाँति रखने की क्या आवश्यकता है?"

पेशवा कुछ कड़े शब्दों में बोले, "मेरे चरित्र पर कालिख पोतकर मुझे नरक का भागी बनाना चाहते हैं? मैं कामी पुरुष नहीं हूँ, शास्त्रीजी, मैं मस्तानी से प्रेम करता हूँ और प्रेम में ईश्वर का अंश है। मैं मस्तानी को पत्नी की तरह रखूँगा, रखैल की तरह नहीं। खैर, मैं थोड़े में आप सबसे यही कहूँगा कि मुझे इस प्रश्न पर उलझाने की कोशिश न की जाए।"

पेशवा उठकर भारी-भारी डग रखते हुए महल में चले गए। दरबार भंग हो गया।

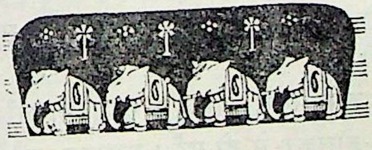

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

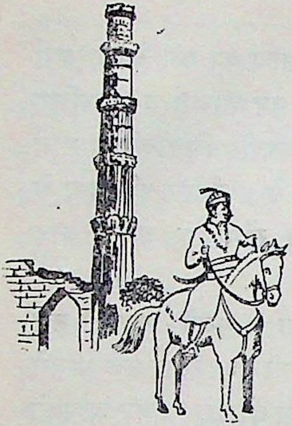

दस

'शनिवार वाड़ा' महल के जो तीन मुख्य द्वार थे, उनमें एक का नाम पेशवा ने 'मस्तानी द्वार' रखा; और महल के भीतर ही 'मस्तानी महल' के नाम से अलग महल बनवाने का आदेश भी दे दिया। उन्होंने जो सम्मान, प्यार और सुख काशीबाई को दे रखा था, वही सम्मान, सुख और प्यार वे मस्तानी को देना चाहते थे।

उन्होंने मस्तानी की शुद्धि की तैयारी भी आरम्भ कर दी, परन्तु इसी बीच उनके पास सूचना आई कि सम्राट् मुहम्मद शाह ने अपने वजीर कमरुद्दीन खाँ को एक विशाल सेना के साथ मालवा रौंद डालने के लिए भेज दिया है। मस्तानी की सलाह से पेशवा ने शुद्धि वाला काम स्थगित कर दिया और तुरन्त सेना को तैयार होने का आदेश दिया।

तीसरे दिन वे सेना लेकर मुगलों से टक्कर लेने के लिए चल पड़े। एड़ से एड़ मिलाए मस्तानी भी उनके साथ घोड़े पर उड़ी जा रही थी।

उधर दोआब में मुगल सरदार सआदत खाँ की मुठभेड़ मराठा सरदार होलकर से हो गई। सआदत खाँ की विशाल सेना के सामने होलकर टिक न सका और मैदान छोड़कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



भाग गया। अब क्या था? सआदत खाँ तो तीसमार खाँ बन गया। उसने मुहम्मद शाह के पास अपनी बहादुरी और विजय का समाचार खूब बढ़ा-चढ़ाकर लिखवा भेजा। साथ में यह भी लिखवा दिया था कि शीघ्र ही मराठों के पेशवा बाजीराव को बन्दी बनाकर जहाँपनाह के सामने हाजिर किया जाएगा।

सम्राट् सआदत खाँ से बड़ा प्रसन्न हुआ उसने दिल्ली से सआदत के लिए बहुत से उपहार भेजे। मथुरा के समीप

वजीर कमरुद्दीन भी सआदत खाँ से आ मिला और फिर जीत की खुशी में जश्न होने लगे।

सआदत खाँ द्वारा सम्राट् मुहम्मद शाह को भेजी गई सूचना और मथुरा के समीप आनन्द-उत्सव मनाते दोनों सेनापतियों का समाचार पेशवा को विस्तार सहित बताया गया। पेशवा ने सब सुना और उस पर कुछ देर सोचा-विचारा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


और दूसरे दिन उन्होंने रास्ता बदल दिया। सारी सेना मुड़ गई। मस्तानी ने अपने घोड़े को एड़ लगाते हुए आश्चर्य से पूछा, "इधर कहाँ ?"

पेशवा बोले, "दिल्ली चल रहे हैं। तुमनें लाल किला नहीं देखा है न ?"

मस्तानी अचकचाई-सी बोली, "नहीं तो..."

पेशवा हँस पड़े। "बस, अब लाल किला देखना, साथ-साथ लाल किले के मालिक को भी देखना !"

मस्तानी सिर मटकाकर बोली, "पहेली न बुझाइए, असली बात बताइए।"

पेशवा ने सब कुछ बता दिया। मस्तानी प्रसन्न थी।

उधर सम्राट मुहम्मद शाह और उसके दरबारी सआदत खाँ की बहादुरी के पुल बाँधकर आपस में प्रसन्न हो रहे थे और इधर पेशवा तुगलकाबाद पहुँचकर धूम मचाने लगे। जो जैसे था वैसे ही दिल्ली को भागा। बाजीराव का नाम सुनते ही मुगलों के शरीर में कँपकँपी दौड़ जाती थी। पेशवा तुगलकाबाद से कुतुब मीनार आए और वहाँ से आगे बढ़कर सैनिकों को दिल्ली के समीप पड़ाव डालने का आदेश दे दिया।

पड़ाव पड़ गया।

दिल्ली में खलबली मच गई। मुगलों की जान सूखने लगी। सब भाग-भागकर किले में दीवाने आम के सामने वाले मैदान में इकट्ठे होने लगे। सम्राट के आने से पहले मैदान खचाखच भर गया। सम्राट आया और यह शोर-गुल देखकर मुँह बनाता हुआ बिगड़कर बोला, "क्या बदतमीजी है, यहाँ पर क्या सब जानवर हो गए हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


अभी सम्राट को बाजीराव के आगमन की जानकारी नहीं थी।

सिंहासन के समीप खड़े मीरहसन कोका ने प्रार्थना की, "बाजीराव सिर पर आ गया है, गरीबपरवर! हो सकता है, कल उसका हमला हो।"

शहंशाह ने कोका को घूरा और बिगड़कर कहा, "तुम्हारा सिर तो नहीं फिर गया है, मीरहसन? तुम्हें सआदत खाँ की जीत की खबर मालूम है या नहीं? उसने बाजीराव को मोची बना दिया है, मोची! क्या समझे?"

कोका बोला, "गरीबपरवर को सआदत खाँ ने गलत खबर दी थी। बाजीराव ने तो दिल्ली की सरहद को आ दबोचा है। उसी के डर से ये सारे लोग इकट्ठे हुए हैं। अब हुजूर ही इनकी जान-माल की रक्षा कर सकते हैं!"

मुहम्मद शाह की आँखें फट गईं, "क्या सचमुच बाजीराव करीब आ गया है, मीरहसन?"

मीरहसन ने आँखें नचाकर कहा, "यकीन करें, जहाँपनाह, हालत बड़ी नाजुक है। वह काफिर करीब नहीं, सिर पर आ चढ़ा है!"

मुहम्मद शाह के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं, परन्तु अभी उसे पूर्णरूप से विश्वास नहीं हो रहा था। वह तनिक सोचते हुए बोला, "हो सकता है, मीरहसन, कोई और आ गया हो और बाजीराव के नाम से हमें चकमा दे रहा हो! तुम फौज लेकर हमला करो। मुझे उम्मीद है, तुम उसे मार भगाओगे। ठीक है?"

मीरहसन मुँह लटकाकर बोला, "जो हुक्म, जहाँपनाह!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


मुहम्मद शाह उठकर अन्दर चला गया ।

दस हजार सिपाहियों को लेकर मीरहसन कोका पेशवा को खदेड़ने के लिए लाल किले से निकला। जिन पेशवा के नाम को सुनकर बड़े-बड़े सेनापतियों का दिल दहल उठता था, उन्हें खदेड़ने के लिए मीरहसन कोका निकला था। सूचना मिलने पर पेशवा ने भी एक टुकड़ी कोका को मार भगाने के लिए भेज दी।

सेनाएँ भिड़ीं। अधिकतर मुगल सैनिक मारे गए। कुछ प्राण बचाकर भागे। कोका घायल हो चुका था। वह भी जान लेकर लाल किले की ओर भाग चला। अपनी रावटी में मस्तानी के साथ बैठे पेशवा सब सुन-सुनकर हँसते रहे।

अब पेशवा किसी भी समय लाल किले पर अधिकार कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने मुहम्मद शाह को चेतावनी भिजवा दी कि भविष्य में अगर फिर ऐसी गलती हुई तो वे दिल्ली पर अधिकार कर लेंगे। मुहम्द शाह ने बार-बार अल्लाहताला का शुक्रिया अदा किया। उसकी जान बच गई। दूसरे दिन पेशवा अपनी सेना लेकर पूना लौट पड़े। मस्तानी ने पूछा, "यह कौन-सा तुक रहा ? लाल किले पर अधिकार क्यों नहीं किया आपने ? यह राजनीति हमारी समझ में तो आई नहीं !"

पेशवा मुस्कराए, "इसलिए नहीं आई कि मैं राजनीति के संग-संग इन्सानियत को भी महत्व देता हूँ। लोक के साथ पर-लोक बनाने की भी तो आवश्यकता है, मस्तानी, अन्यथा ईश्वर के सामने क्या उत्तर दूंगा ? फिर तुम्हारे विचार के अनुसार तो यों भी पहली गलती माफ होनी चाहिए। याद है तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी बात ?"

मस्तानी ने मुस्कराते हुए सिर झुका लिया और मन ही मन बड़ी देर तक अपने पति की महानता की सराहना करती रही। ऐसा उदार और मानवता का पुजारी दूसरा कौन है !

पेशवा को पूना पहुँचने में कई मास लग गए। वे सीधे न आकर मस्तानी को भिन्न-भिन्न प्रान्तों का भ्रमण कराते हुए पूना लौटे। आते ही वे तुरन्त शुद्धि का आयोजन करने लगे, पर उन्हें मालूम हुआ कि ब्राह्मण समुदाय अब भी विरोध करने के पक्ष में है और वह किसी भी कीमत पर शुद्धि नहीं होने देगा।

पेशवा को दुःख हुआ और साथ ही क्रोध भी आया, किन्तु उन्होंने शान्ति का रास्ता पकड़ना ही उचित समझा। उन्होंने गुर्गों को बुलाकर वास्तविकता की जानकारी की। बात सच निकली। सब विरोध कर रहे थे।

पेशवा ने फिर उन्हें भले-बुरे और लाभ-हानि का तर्क देकर समझाने का प्रयत्न किया, पर उन ढोंगियों पर कोई असर नहीं पड़ा। अब पेशवा अपना क्रोध न रोक सके और बिगड़कर बोले, "तो फिर मुझे अपनी शक्ति का प्रयोग करना होगा ?"

एक ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "आप कर सकते हैं। पर इसमें हम सबका क्या दोष है ? यदि हम हाँ कह दें, तब भी तो कुछ नहीं बन सकता है, श्रीमन्त, जब आपका घर स्वयं आपके विरोध में है।"

"क्या मतलब ?" पेशवा चौंक पड़े।

ब्राह्मण बोला, "यही कि श्रीमन्त की पत्नी काशीबाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


स्वयं शुद्धि का विरोध कर रही हैं !"

पेशवा को जैसे काठ मार गया हो, "क्या कहा आपने ?"

"सत्य ही कह रहा हूँ, श्रीमन्त, आप इसका पता लगा सकते हैं ।

पेशवा की चिन्ता बढ़ गई । उन्होंने सब को जाने की अनुमति दे दी । पेशवा वहाँ से उठकर सीधे काशीबाई के पास पहुँचे और आसन पर बैठते ही बोले, "मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूँ !"

"मुझे मालूम है । आपका पूछना बेकार होगा । उत्तर विरुद्ध मिलेगा !" काशीबाई ने रुखाई से कहा !

पेशवा चिल्ला पड़े, "काशी ! ऐसी नीचता तुम्हारे अन्दर है ? एक पतिव्रता स्त्री का क्या यही धर्म है ? क्या यही तुमने वेदों और शास्त्रों में पढ़ा है ? "

काशीबाई भी कठोर शब्दों में बोली, "मैंने तो कुछ भी नहीं पढ़ा है,लेकिन आपने क्या यही पढ़ा है कि अपने सुख के लिए दूसरों के जीवन का सत्यानाश कर दें ? आप मस्तानी को पत्नी की तरह रखने के लिए क्यों व्याकुल हैं ? क्या इस व्याकुलता के पीछे कोई कारण नहीं है ? मस्तानी द्वारा उत्पन्न पुत्र को ही आप अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाना चाहते हैं ? क्या आप…"

पेशवा ने डाँटा, "चुप रहो काशी ! तुम्हारा स्वार्थी हृदय बड़ा ओछा है ! तुम प्रत्येक कार्य को स्वार्थ की दृष्टि से देखती हो ! मुझे स्वप्न में भी तुमसे ऐसी आशा नहीं थी । ठीक है ! जो तुम्हें उचित लगे, सो करो; पर याद रखो, अन्त में तुम्हीं को पछताना पड़ेगा । यह तुम्हारे लिए बड़ा दुखदायी सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



होगा ।"

काशीबाई ने लम्बी साँस खींचकर कहा, "अब मेरे भाग्य में सुख कहाँ है, पेशवा साहब, अब तो जो झेलना है, उसे झेलूंगी ही, लेकिन विधर्मी नहीं बनूँगी । इसे आप भली-भाँति समझ लें ।"

पेशवा उठकर क्रोध से पैर पटकते हुए चले गए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## ग्यारह

पेशवा जब काशीबाई के यहाँ से लौटकर मस्तानी के पास आए तो बड़े उदास थे। मस्तानी समझ गई कि काशीबाई ने उन्हें किस प्रकार का उत्तर दिया होगा। पेशवा के पैताने बैठती हुई वह धीरे से बोली, "अभी तक तो मैंने आपसे कुछ कहा नहीं था, लेकिन मैं पूछती हूँ कि शुद्धि के लिए आपको इतनी परेशानी क्यों है? क्या शुद्धि होने पर कोई नई बात नहीं हो जाएगी? मैंने तो कभी आपसे इसके लिए संकेत तक नहीं किया, फिर आप बेकार में अपने को क्यों दुखी बना रहे हैं?"

"मस्तानी! मैं प्रेम के आदर्श पर कालिख नहीं पोतना चाहता। जब मैंने तुमसे प्रेम किया है, तो तुम्हें पत्नी के रूप में रखना भी मेरा धर्म है।"

"तो क्या मैं इस समय आपके साथ पत्नी के रूप में नहीं रह रही हूँ? क्या इस प्रकार का प्यार किसी अन्य स्त्री को प्राप्त होगा?" मस्तानी ने गीली आँखों से उन्हें देखते हुए कहा।

पेशवा ने कहा, "सो तो ठीक है, पर संसार की दृष्टि में मैंने अभी तुम्हें पत्नी के रूप में कहाँ ग्रहण किया है? यह दुनिया मक्कारों की है। सत्य को असत्य बताकर ये मेरे प्रेम पर कीचड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

उछाल सकते हैं।"

मस्तानी खिलखिलाकर हँस पड़ी, "मालूम पड़ता है, रूढ़ियों और ढोंगियों को चुनौती देने वाले पेशवा साहब अब उनके आगे घुटने टेकने लगे हैं। अपनी चिन्ता भूलकर उन्हें अब संसार और मक्कारों की चिन्ता होने लगी है? कहीं श्रीमन्त को मेरे प्रेम पर कुछ सन्देह तो नहीं होने लगा है?"

कोई उत्तर नहीं मिला। पेशवा मौन रहे। क्षण भर बाद मस्तानी कुछ कहने वाली थी कि पेशवा बोल पड़े, "मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ, मस्तानी? तुम मेरा मतलब नहीं समझ रही हो। मैं घुटने नहीं टेक रहा हूँ। मुझे यह भी देखना है कि मेरे न रहने पर तुम्हारे सुख और सम्मान में किसी प्रकार की कमी न आने पाए।"

मस्तानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली, "समझी! श्रीमन्त मुझे अकेला छोड़कर जाना चाहते हैं। ऐसा नहीं होगा, महाराज? मस्तानी को आपसे कोई अलग नहीं कर सकता है। मस्तानी भी श्रीमन्त के साथ-साथ मरेगी। इसे सत्य और अटल समझिए!"

अवाक् होकर पेशवा उसे निहारने लगे।

मस्तानी भी उन्हें निहारती हुई फिर बोली, "मुझे नहीं मालूम था कि शुद्धि के पीछे श्रीमन्त का यह मतलब है। उठिए! मस्तानी के प्रेम में बड़ी शक्ति है, श्रीमन्त, मस्तानी मरेगी तो इन्हीं चरणों में, और जीवित रहेगी तो इन्हीं चरणों में। अलगाव असम्भव है।"

वह उठी और दूसरे कमरे से तानपूरा ले आई। फिर सामने बैठकर उन्हें भजन सुनाने लगी। पेशवा भी सब कुछ भूलकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


खो गए। उनके व्यग्र मन को मस्तानी के मधुर स्वर से अपार शान्ति मिल रही थी।

मस्तानी की बातों का पेशवा पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। वे मस्तानी के कहने के अनुसार चलने लगे। उनकी चिन्ता समाप्त हो गई। वे अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए मस्तानी के प्रेम में खो गए। काशीबाई से उन्हें घृणा हो गई थी।

समय बीतता गया। पेशवा अपने संकल्प को पूरा करने में उसी प्रकार लगे रहे। उनका यश दिन पर दिन फैलता गया। जीत पर जीत होती गई।

मुगलों का भविष्य अन्धकार में डूबता गया। उन्हें विश्वास होने लगा कि पेशवा की शक्ति के आगे उनकी दाल नहीं गल सकती। अब हिन्दुस्तान मुगलों का गुलाम नहीं रह सकता है। पूरे देश में एक नई चेतना फैल उठी थी। अपना राज्य और अपने देश की भावना दृढ़ होने लगी थी, परन्तु भविष्य में ईश्वर क्या करने वाला है, इसकी जानकारी किसे थी?

उधर काशीबाई भी हठ पर उतर आई। उनके मन में सुलगती क्रोध की आग भड़क उठी। वह भले-बुरे का ध्यान किए बिना अपनी शक्ति का परिचय देने के लिए तैयार हो उठी। उसे अपनी बुद्धि और बल पर विश्वास था। वह समझती थी कि उसे पेशवा पर विजय मिल सकती है, परन्तु उस पगली को यह न मालूम था कि जिसे वह अपनी विजय समझती है, वह भी उसकी पराजय ही है।

इधर पेशवा भी इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि वह उनकी चिन्ता नहीं करती तो उन्हें उसकी चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है? कर्तव्य पर दृढ़ रहना उनका धर्म था,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



इसका वे पालन कर रहे थे। समय बीतता गया।

मस्तानी प्रसन्न थी। वह सदा इसी प्रयत्न में लगी रहती थी कि उसका प्रेम महान् बनकर अमर हो जाए।

इसी बीच पेशवा के पास सूचना आई कि निजाम का लड़का नासिरजंग एक बड़ी सेना लेकर औरंगाबाद से चल पड़ा है। वह शीघ्र ही गोदावरी नदी पार करके मराठा प्रदेशों को रौंदना आरम्भ कर देगा। जनता के हित के लिए पेशवा को तत्काल बढ़कर उसे रोकना अनिवार्य हो गया। पेशवा का आदेश पाते ही सेना तैयार होने लगी।

पेशवा अपने सामान के साथ-साथ मस्तानी के भी सामान बँधते देखकर आश्चर्य से बोले, "तुम्हें अपने शरीर का ध्यान है या नहीं?"

"बहुत है।" मस्तानी हँसकर बोली।

"फिर यह तैयारी कैसी?"

"आपके साथ चलने की, और कैसी?"

"तुम इस हालत में घोड़े पर चलने योग्य हो?"

"योग्य हूँ या नहीं हूँ, लेकिन मैं चलूंगी जरूर।" मस्तानी ने निश्चय भरे स्वर में उत्तर दिया।

पेशवा ने प्यार भरे शब्दों में डाँटा, "नहीं। तुमको यहीं रहना होगा। अपनी जान तो दोगी ही, साथ-साथ उस आने वाले शिशु की भी हत्या करोगी। ऐसी जिद किस काम की। मेरे लौटने में अधिक समय नहीं लगेगा।"

मस्तानी मीठे शब्दों में बोली, "अगर इसी बहाने जान चली जाए तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है, महाराज, आपके चरणों में पड़ी हुई मेरी आत्मा मुझसे छुटकारा ले ले,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



तभी तो मेरा प्रेम अमर होगा। मेरी तो साधना सफल हो हो जाएगी, श्रीमन्त !"

"तो तुम्हें अपने स्वार्थ के आगे और किसी के स्वार्थ का ध्यान नहीं है ?" पेशवा ने नरम होकर कहा।

"जी नहीं। मेरे इसी स्वार्थ में मेरा परमार्थ है। ऐसा हो जाए तो क्या कहना है !" मस्तानी अडिग थी।

उसके कपोलों को थपथपाकर पेशवा ने कहा, 'विश्वास और सच्ची लगन है तो ऐसा भी हो जाएगा, लेकिन समय तो आने दो। अभी बहुत जल्दी है। अच्छा, अपना सामान अलग कराओ। तुम्हारा चलना ठीक नहीं है।"

मस्तानी चुपचाप उठ खड़ी हुई। दासियों से सामान अलग करने को कहकर वह दूसरे कमरे में चली गई और पलग पर लेटकर रोने लगी।

पेशवा बड़ी उलझन में पड़ गए। मस्तानी को साथ ले जाएँ तो भी परेशानी, न ले जाएँ तो भी। वे पीछे-पीछे उनके कमरे में गए। मस्तानी फफक-फफककर रो उठी। पेशवा ने धीरे से समझाया, "पगली कहीं की ! कोई बड़ी लड़ाई है क्या ? एक-दो सप्ताह के भीतर लौट आऊँगा। नासिरजंग कब का लड़ने वाला है ? जैसा बाप, वैसा बेटा। और अगर शीघ्र लौटने का कोई समाचार न मिले तो कुछ दिनों बाद तुम भी चली आना। बस, अब तो खुश हो ! चलो, हमारी विदाई की तैयारी करो। जितनी जल्दी जाना होगा, उतनी ही जल्दी लौट पाऊंगा।"

विवश होकर मस्तानी को उठना पड़ा। उसने जैसे-तैसे पेशवा को विदा किया, परन्तु उनके जाते ही वह फूट-फूट-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


कर रोने लगी। पता नहीं क्यों वह इस बार बहुत घबरा रही थी। किसी अनजाने भय के कारण उसका हृदय काँप रहा था।

काशीबाई जिस अवसर की ताक में थी, वह सहज ही मिल गया। उसने तुरन्त सैनिकों से "मस्तानी महल' घिरवा लिया और स्वयं कुछ सैनिकों को लेकर ऊपर पहुँची।

मस्तानी अपने कमरे में लेटी थी। कल से उसने पानी नहीं पिया था। सोचने का एक ऐसा तार बँध गया था, जो कहीं से टूटता ही नहीं था।

दरवाजे पर आहट हुई। उसने सिर घुमाकर देखा। सामने काशीबाई को देखकर वह उठ खड़ी हुई, बोली, "आइए, बैठिए!"

काशीबाई ने तीखे स्वर में कहा, "शिष्टाचार का ढोंग न रचो! मैं तुम्हारी नस-नस से परिचित हूँ। तुरन्त इस कमरे को खाली कर दो।"

मस्तानी अवाक् उसकी ओर देखती ही रह गई।

काशीबाई बिगड़कर बोली, "मेरी ओर क्या देख रही है? कमरे से बाहर निकल!"

अब मस्तानी के मुँह से आवाज निकली, "आपका मतलब मैं समझी नहीं।"

काशीबाई ने गरजकर कहा, "अभी मतलब समझाए देती हूँ, पहले कमरे से बाहर तो निकल।"

"लेकिन..."

काशीबाई कड़ककर बोली, "लेकिन-वेकिन करेगी या निकलेगी? तेरे पेशवा साहब अब यहाँ रक्षा करने नहीं आएँगे। जल्दी निकल वरना..."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

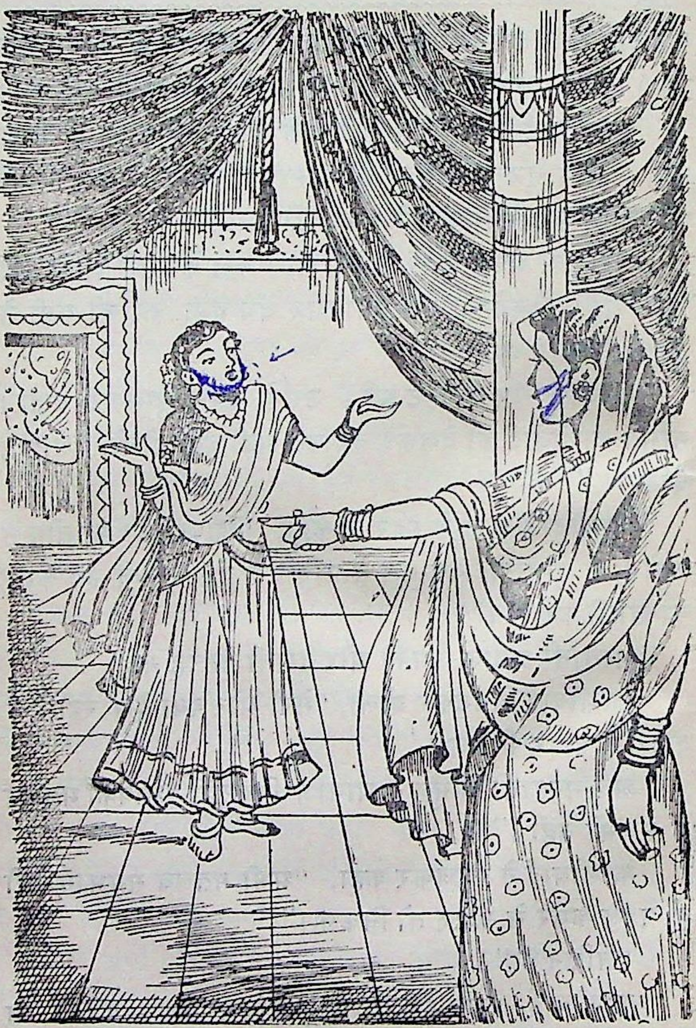

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri 

मस्तानी सब कुछ समझ गई। अब उसने भी अकड़कर कहा, "मैं नहीं निकलूँगी। यह मेरा घर है। कोई मुझे निकाल नहीं सकता!"

काशीबाई ने आवाज लगाई। दो सैनिक अन्दर आए। उसने आदेश दिया, "इसे घसीटकर इस कमरे से तुरन्त बाह निकालो?"

सैनिक खड़े रहे। उन्हें साहस नहीं हो रहा था।

काशीबाई ने सैनिकों को डाँटा, "मैं कहती हूँ, खड़े-खड़े मुँह क्या देख रहे हो? इसे निकालते क्यों नहीं?"

सैनिक आगे बढ़े।

मस्तानी ने परिस्थिति समझ ली। इससे पहले कि सैनिक हाथ लगाएँ, वह बोली, "कहाँ चलना होगा?"

काशीबाई हँस पड़ी, "बस, इतने में ही जोश ठण्डा पड़ गया! बड़ी भाई अपना कहने वाली! कुलटा कहीं की!" वह आगे-आगे चलने लगी।

महल के एक सिरे पर एक छोटे-से कमरे के सामने आकर काशीबाई रुक गई। उसने मस्तानी को अन्दर जाने का संकेत किया। मस्तानी अन्दर चली गई।

काशीबाई मुस्कराती हुई बड़े गर्व के साथ बोली, "देखी मेरी ताकत! जब अपने पर उतर आती हूँ तो कोई काम मेरे लिए कठिन नहीं रहता।"

मस्तानी ने भी निडर होकर उत्तर दिया, "कठिन न होता तो पेशवा साहब का प्रेम मुझे न मिलता। अपनी शक्ति को वहाँ क्यों नहीं परखतीं? मुझे उनसे अलग करके तुम उनका प्यार नहीं पा सकतीं। पेशवा साहब हमारे हैं और हमेशा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



हमेशा हमारे ही रहेंगे ।"

काशीबाई खिसियाकर बोली, "जब हमारे नहीं होंगे तो तेरे भी नहीं होंगे । इसे गाँठ बाँध ले ।"

वह पैर पटकती हुई चली गई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## बारह

नासिरजंग को घेरने और पराजित करने में पेशवा को बहुत दिन नहीं लगे। अन्त में गिड़गिड़ाकर नासिरजंग ने सन्धि के लिए प्रार्थना की।

पेशवा को दया आ गई। उन्होंने उसकी जान छोड़ दी और स्वयं पूना लौट पड़े। रास्ते में सैनिकों ने विश्राम करने के विचार से रुकने की इच्छा प्रगट की। पेशवा रुक गए। रेभर गाँव के समीप पड़ाव पड़ गया।

रेभर पूना के ही था। सुन्दर स्थान होने के कारण पेशवा ने मस्तानी को भी वहीं बुला लेना उचित समझा। अपने खास नौकर शिंदे को उन्होंने पूना भेज दिया।

दो दिन बीत गए। शिंदे नहीं लौटा।

तीसरे दिन सन्ध्या समय पेशवा ने शिकार से लौटते ही द्वारपाल से पूछा, "शिंदे नहीं आया अभी तक ?"

नहीं, श्रीमन्त।"

पेशवा क्षण-भर सोचते रहे फिर बोले, "वह जिस समय पहुँचे मुझे तुरन्त सूचित किया जाए।"

द्वारपाल ने सिर झुकाया, "जी श्रीमन्त !"

पेशवा अन्दर चले गए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


रात बहुत नहीं बीती थी । शिंदे पूना से लौटा । वह सीधा पेशवा की रावटी में गया । पेशवा जाग रहे थे । आहट मिलते ही करवट बदली । शिंदे को देख उठ बैठे, "रानीजी आ गईं ?"

शिंदे ने सिर लटकाए उत्तर दिया, "नहीं, श्रीमन्त !"

"क्यों ? तबीयत तो ठीक है ?"

शिंदे चुप रहा ।

पेशवा ने तनिक ध्यान से उसे देखा और चिन्तित स्वर में बोले, "कोई विशेष बात है ? बोलते क्यों नहीं ?"

"रानी जी से भेंट न हो सकी ।"

"भेंट न हो सकी। क्यों ?" पेशवा चौंक उठे ।

"बड़ी रानीजी ने शायद उन्हें बन्दी बना लिया है ।"

पेशवा तड़प उठे, "बन्दी बना लिया है ? कहाँ ?"

"उसी महल में…"

"क्यों ?" पेशवा का स्वर भारी हो गया ।

"कारण नहीं मालूम हो सका, श्रीमन्त ! पूछने पर बड़ी रानी जी ने डाँटकर मुझे लौट जाने का आदेश दिया ।"

कुछ समय तक पेशवा आँखें फाड़कर शिंदे को देखते ही रह गए, फिर गहरी साँस खींचकर बोले, "जाओ !"

शिंदे बाहर निकल आया ।

रात बीत गई। पेशवा करवटें बदलते रहे। घोर चिन्ता के कारण वे पल भर को भी सो न सके। सवेरा हुआ। वे उठ बैठे। नित्य-कर्म कर फौरन शिकार को निकल पड़े ।

दिन ढले तक वे यों ही बिना कोई शिकार किए जंगल में घोड़ा दौड़ाते रहे । क्यों दौड़ाते रहे, यह उनके सैनिक भी नहीं समझ पाए। फिर वे अचानक लौट पड़े। किसी को कुछ पूछने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



का साहस न हो सका। उनका चेहरा बहुत उदास था।

रावटी में आते ही वे लेट गए। कुछ समय बाद यह सुनकर सैनिकों को महान् आश्चर्य हुआ कि उन्हें ज्वर आ गया है। महान् आश्चर्य की बात इसलिए थी कि अभी तक पेशवा को बीमार होते तो दूर, उन्हें थकान का अनुभव करते हुए भी किसी ने नहीं देखा था। रावटी के बाहर सेना-नायकों और सरदारों की भीड़ इकट्ठी होने लगी, परन्तु अन्दर जाने की किसी को अनुमति नहीं थी, राजवैद्य अन्दर थे और उन्हीं के बाहर आने की प्रतीक्षा हो रही थी।

थोड़ी देर बाद राजवैद्य बाहर निकले। उन्होंने बताया कि श्रीमन्त ने दवा लेने से इन्कार कर दिया है।

एक सरदार ने पूछा, "क्यों? तबीयत तो ठीक है?"

"अभी तो ठीक है पर ज्वर बढ़ रहा है! दवा न लेने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


रूप भयंकर हो सकता है ।

"लेकिन श्रीमन्त ने दवा लेने से इन्कार क्यों कर दिया ?"

राजवैद्य स्वयं भी उलझन में पड़े थे, बोले, "क्या बताऊँ ? कोई कारण समझ में नहीं आ रहा है। वे अधिक बोलना भी नहीं चाहते !"

आधी रात का समय होगा । पेशवा की बेचैनी बढ़ती गई। वे तख्त पर करवटें बदल रहे थे। जब-तब बर्राने भी लगते ।

राजवैद्य पुनः आए। उन्होंने औषधि देने का प्रयत्न किया परन्तु पेशवा ने हाथ से रोक दिया। राजवैद्य ने जबरदस्ती करने की कोशिश की। पेशवा ने मुँह फेर लिया। राजवैद्य विवश हो गए। उन्होंने शिंदे को बाहर चलने का संकेत किया। बाहर आकर वह शिंदे से बोले, "काशीबाई के पास सूचना भेज दो। उनका आना अब बहुत आवश्यक है ।"

शिंदे ने मरे स्वर से कहा, "अच्छी बात है, भेजे दे रहा हूँ !"

ढलती रात में चार घुड़सवार पूना के पथ पर शीघ्रता से बढ़े जा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## तेरह

मस्तानी की हालत बड़ी खराब थी। वह पेशवा के वियोग में तड़प रही थी। उसे अपने बन्दी बनने का उतना दुःख नहीं था, जितना पेशवा का अभी तक कोई समाचार न पाने के कारण था। वह दिन-रात इसी चिन्ता में डूबी रहती, पेशवा का न तो कोई समाचार ही प्राप्त हो सका और न वे अब तक पूना ही लौट सके, आखिर क्यों ?

उसे कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था, इसलिए उसकी चिन्ता और भी बढ़ गई थी। उसने खाना-पीना बन्द कर दिया था और दिन-रात आँसू बहाती रहती थी। उसे अब संसार की किसी वस्तु की चाह नहीं थी, अगर चाह थी तो केवल पेशवा के दर्शन की।

कई दिन और बीत गए। पेशवा के विषय में कुछ भी जानकारी न मिल सकी। मस्तानी को लगता कि जीवन का अन्त कर लेना ही उत्तम है। उसे अब जीवन नहीं, मृत्यु प्यारी थी। सवेरे उसकी दाईं आँख फड़कने लगी थी। उसकी व्यथा और बढ़ गई। उसे विश्वास हो गया कि कोई बहुत दुखदायी घटना घटने वाली है। वह बार-बार आँख मलती हुई शोक में बिंधने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



दोपहर के लगभग दासी भोजन लेकर आई। यद्यपि वह भोजन नहीं करती थी, फिर भी काशीबाई का आदेश था कि भोजन नित्य भेजा जाए। भोजन एक ओर रखकर दासी मस्तानी के समीप बैठ गई और धीमे से बोली—"शायद आपको बताया न जाए, श्रीमन्त की तबीयत बहुत खराब है।"

मस्तानी चौंककर बोली, "क्या श्रीमन्त आ गए ?"

"आए नहीं। वे रेभर में हैं।"

"रेभर में हैं ! मैं कुछ समझी नहीं।"

दासी ने बताया, "लड़ाई से लौटने पर श्रीमन्त ने रेभर गाँव में विश्राम के लिए पड़ाव डाला था। वहीं उनको ज्वर आ गया।"

मस्तानी कुछ देर सोचती रही, फिर पूछ बैठी, "तुम्हें किसने बताया !"

सारे नगर में बड़ी हलचल है। श्रीमन्त की तबीयत अधिक खराब है।" दासी ने धीरे से कहा।

मस्तानी की आँखों से आँसू बहने लगे। दासी ने उसे धीरज बँधाया जब वह चलने को हुई तो मस्तानी उसके पैरों पर गिर पड़ी और बिलख-बिलखकर रोने लगी।

दासी ने घबड़ाकर पैर खींच लिए और पास ही बैठकर उसकी आँखों को पोंछ-पोंछकर स्वयं भी रोने लगी।

मस्तानी ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "तुमसे एक विनती है। मैं श्रीमन्त को एक बार देखना चाहती हूँ। मुझे किसी प्रकार यहां से बाहर निकाल दो।"

दासी बड़ी उलझन में पड़ गई। काम कठिन था। फिर भी उसने कुछ सोचते हुए पूछा, "पर आप रेभर तक इस दशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


में पहुँच सकेंगी ?"

मस्तानी गिड़गिड़ाकर बोली, "पहुँच जाऊँगी, बाई, तुम किसी प्रकार मुझे महल से बाहर निकाल दो। तुम्हारा उपकार जीवन-भर नहीं भूलूंगी। बस, श्रीमन्त के दर्शनों के लिए यह प्राण रुके हैं।" वह फिर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

दासी ने उसे उठाया और विश्वास दिलाया कि वह संध्या तक कुछ न कुछ अवश्य करेगी।

दीया-बाती के समय दासी फिर आई और झटपट अपने वस्त्र उतारते हुए मस्तानी से बोली, "आप मेरे कपड़े पहनकर जल्दी से महल के बाहर निकल जाइए। अवसर उपयुक्त है।"

मस्तानी ने पूछा, "और तुम ?"

"मैं आपके कपड़े पहनकर यहीं बैठ रहूँगी। जल्दी कीजिए। समय थोड़ा है।" दासी स्वयं ही उसके कपड़े बदलने लगी।

एक नवीन आशा से मस्तानी का मन प्रसन्न हो उठा था। उसने दासी को गले लगाया और पहरेदारों की आँखों से बचती-बचाती महल के बाहर पहुँच गई।

नगर से निकलकर कुछ देर तक एक पेड़ के नीचे बैठकर उसने दम लिया और फिर रेभर की ओर चल पड़ी। हफ्तों से अन्न न ग्रहण किया था। गर्भवती थी, फिर उसे नंगे पाँव चलने का अभ्यास न था, फिर भी वह इस समय कोसों दूर रेभर गाँव के मार्ग पर भागती चली जा रही थी।

उसे अब न तो अपने जीवन का मोह था और न उस आने वाले शिशु के लिए ममता थी। उसे तो बस किसी प्रकार पेशवा साहब तक पहुँचने की धुन थी। वह लम्बे-लम्बे डग रखती चली जा रही थी। मन में कितनी ही बातें उमड़ रही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


थीं। रेभर गाँव पहुँचकर वह पेशवा को कसम दिलाएगी कि फिर कभी उससे अलग न हों।

उधर काशीबाई को किसी दूसरी दासी से मस्तानी के भाग निकलने की सूचना मिली। वह क्रोध से उफनती हुई वहाँ पहुँची, जहाँ मस्तानी को बन्द किया था। उसने आते ही उस दासी को चार-छह थप्पड़ मारे और मस्तानी के विषय में पूछने लगी। दासी ने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया। काशीबाई आग-बबूला हो गई। उसने दासी को कोड़े लगाने का आदेश दिया। कोड़े पड़ने लगे। बेचारी दासी कहाँ तक सहन करती, उसने अन्त में उगल दिया। काशीबाई ने तुरन्त सैनिकों को आदेश दिया कि मस्तानी को किसी भी दशा में पकड़कर लाया जाए।

सैनिकों की टुकड़ियाँ चारों ओर निकल पड़ीं।

मस्तानी अभी बहुत दूर नहीं जा सकी थी। सहसा उसे घोड़ों की टापें सुनाई पड़ीं। उसे सन्देह हुआ। वह सड़क के किनारे एक पेड़ की ओट में जा छिपी। घुड़सवार उसके सामने से आगे निकलते गए, परन्तु न मालूम कैसे अन्तिम घुड़सवार की निगाह उस पर पड़ गई। वह घोड़ा मोड़कर मस्तानी के समीप जा खड़ा हुआ और फिर सबको आवाज दी। बाकी घुड़सवार भी लौट पड़े। मस्तानी काँपने लगी, फिर भी उसने दृढ़ स्वर से पूछा, "आप सब क्या चाहते हैं?"

दुर्भाग्य की बात, नायक ने मस्तानी को पहचान लिया। वह घोड़े से नीचे उतरा और बड़ी शिष्टता के साथ बोला, "बड़ी रानीजी की आज्ञा से हम लोग आपकी ही खोज में निकले हैं। आपको वापस चलना होगा। सब कुछ जानते हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


भी हम लोग विवश हैं, रानी जी !"

मस्तानी सब कुछ समझ गई। लौटने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था। इसी में बुद्धिमानी थी। वह चुपचाप लौट पड़ी। सैनिक मस्तानी की दशा पर मन ही मन दुख प्रकट करते हुए सिर लटकाए उसे साथ लेकर नगर की ओर मुड़ चले।

काशीबाई प्रतीक्षा में बैठी ऊँघ रही थी। उसे मस्तानी के पकड़े जाने की सूचना दी गई। वह हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई और दाँत पीसकर बोली, "तो कुलटा पकड़ में आ ही गई ! कहाँ है ?"

मस्तानी काशीबाई के सामने आई और इसके पूर्व कि काशीबाई कुछ कहे, मस्तानी उसके पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ाकर कहने लगी, "मुझे एक बार पेशवा साहब के दर्शन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri



करा दीजिए, रानीजी ! बस, एक बार। फिर जो दण्ड देना चाहें, दे लें। मुझे सब स्वीकार है। वह काशीबाई के पैरों को पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी।

काशीबाई ने पैरों को झटक दिया और क्रूरतापूर्वक हँसती हुई बोली, "देखी मेरी ताकत ? तुझे तो घुला-घुलाकर मारूँगी, घुला-घुलाकर! और फिर उसने एक सैनिक को उसे फिर बन्दी बनाकर कमरे में डाल देने का आदेश दिया।

सैनिक मस्तानी को खींचता हुआ बाहर ले गया।

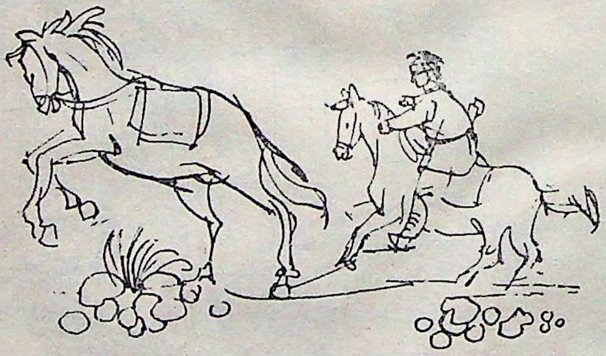

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

## चौदह

इतवार को काशीबाई रेभर गाँव पहुँची। दिन ढल चला था। काशीबाई ने अपने पति के डेरे में प्रवेश किया। पेशवा शान्त लेटे हुए थे। अन्दर राजवैद्य, सेनापति पिलाजी यादव और शिंदे थे। सबके चेहरे पर उदासी छायी थी। काशीबाई पेशवा के सिर पर हाथ रखती हुई सिरहाने बैठ गई। उसकी भी आँखें डबडबा आई थीं।

कोमल हाथों का स्पर्श होते ही पेशवा के मुँह से निकला, "मस्तानी!" और उनकी आँखें खुल गईं। परन्तु काशीबाई को देखकर उन्होंने फिर आँखें बन्द कर लीं। बोले, "अच्छा, तुम हो! कहो, कैसे आना हुआ? क्या घाव पर नमक छिड़कने आई हो? ठीक है। वह भी कर लो। तुम्हारा यही अरमान क्यों रह जाए?

काशीबाई रोती हुई हुई उनके पैरों से लिपट गई, "ऐसा न कहिए, महाराज!"

पेशवा उसी प्रकार धीरे से बोले, "ऐसा न कहूँ तो कैसा कहूँ? तुमने जो चाहा था, वही हो रहा है। तुमने मस्तानी को बन्दी बना लिया है न?"

काशीबाई चुप रही।

"बोलती क्यों नहीं? बन्दी ही बनाया है या मरवा भी डाला है?" पेशवा का स्वर काँप रहा था।

"नहीं महाराज! केवल बन्दी बनाया है।"

"क्यों? उसने कौन-सा अपराध किया था?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


काशीबाई चुप रही। क्या उत्तर देती?

पेशवा तनिक कराहते हुए बोले, "काशी! तुमने मेरी जान ली सो तो ली ही, लेकिन देश का बड़ा अहित किया। तुम्हीं ने ब्राह्मणों को भड़काकर मेरे विरुद्ध उभारा और जब उससे भी तुम्हारा काम न बना तो अन्त में मुझसे न लड़कर मस्तानी को कैद कर लिया। हो सकता है उसे तुम मरवा भी डालो। ठीक है, मरवा डालना। इसी में उसकी भलाई भी है।" वे कुछ देर तक चुप रहे, फिर बोले, "पिलाजी!"

"श्रीमन्त!" कहते हुए पिलाजी समीप आ गए।

पेशवा ने धीरे-धीरे कहा, "आने वाली पीढ़ियाँ इस औरत को गालियाँ तो देंगी ही...पर तुम जहाँ तक हो सके मेरे उठाये हुए बीड़े की लाज बचाने का प्रयत्न करना। जिस दिन अत्याचारियों से देश मुक्त हो जाएगा, मेरी आत्मा को उसी दिन सन्तोष मिलेगा..."

उन्होंने करवट बदली और चुप हो गए।

धीरे-धीरे रात समाप्त होने लगी। सवेरा होने को आया। पेशवा की साँसें अभी चल रही थीं। उन्होंने करवट बदली और अचानक उनके मुँह से निकला, "शिंदे, मस्तानी को काशी ने बन्दी बना लिया है न? अच्छी बात है..."

उन्होंने फिर करवट ली और प्राण-पखेरू उड़ गए।

हाहाकार मच गया।

दूसरे दिन पेशवा की मृत्यु का समाचार पूना पहुँचा। महल में रोना-धोना पड़ गया। अचानक रोने की आवाज से मस्तानी चौंकी। वह अपने बन्द कमरे में व्याकुल हो उठी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

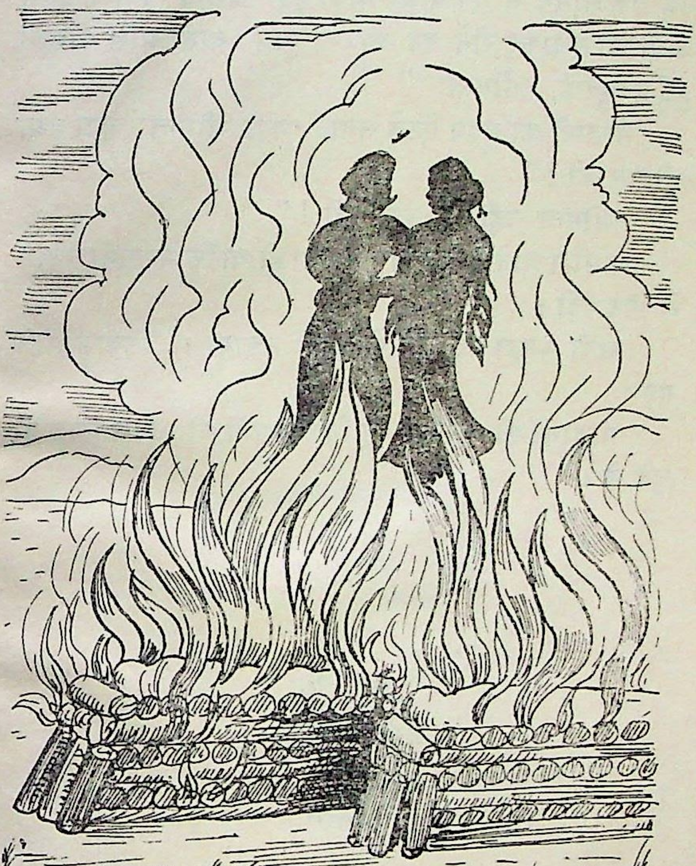

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri


तब तक सामने से एक दासी जाती हुई दिखाई पड़ी। उसने दासी को बुलाकर रोने का कारण पूछा। दासी आँखें पोंछती हुई बुदबुदाई, "श्रीमन्त..."

मस्तानी का हृदय ऐंठने लगा, "क्या श्रीमन्त...क्या हुआ श्रीमन्त को?"

"श्रीमन्त नहीं रहे, रानी जी!"

दासी ने जाने के लिए पैर उठाया ही था कि मस्तानी धड़ाम से गिर पड़ी।

दासी घबड़ा गई। उसने शोर मचाया। किवाड़ खोले गए।

मस्तानी की बन्दिनी देह निर्जीव पड़ी थी। प्राण मुक्त हो चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE